नास्तिकता से इस्लाम की ओर पलायन

شركاء التنفيذ:

دار الإسلام

جمعية الربوة

رواد الترجمة

المحتوى الإسلامي

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع
الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغيير في النص.

Telephone: +966114454900
ceo@rabwah.sa
P.O.BOX: 29465
RIYADH: 11557
www.islamhouse.com

नास्तिकता से इस्लाम की ओर पलायन

प्रश्नोत्तर

आरम्भ करता हूँ अल्लाह के नाम से। सारी प्रशंसा अल्लाह की है, तथा दरूद एवं सलाम हो अल्लाह के रसूल, उनकी औलाद, साथियों, उनके मार्ग पर चलने वालों और उनसे प्रेम रखने वालों पर। तत्पश्चात् :

"नास्तिकता से इस्लाम की ओर पलायन" नाम की यह पुस्तिका आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

यह पुस्तिका नास्तिकता की प्रकृति और उसकी समस्याओं को बयान करती है, तथा यह भी स्पष्ट करती है कि नास्तिक्ता बुद्धि एवं स्वभाव की स्वीकृतियों के किस प्रकार विरुद्ध है।

साथ ही सृष्टिकर्ता के होने के कुछ प्रमाण पेश करती है।

तो सबसे पहले हम महान एवं उच्च अल्लाह को अक़्ल के द्वारा जानते हैं। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या वे स्वयं पैदा करने वाले हैं?" [सूरा अत-तूर : 35]

अक़्ल के दृष्टिकोण से इसकी तीन संभावनाएँ हैं, चौथी कोई संभावान नहीं हो सकती :

पहली : हमारी सृष्टि बिना सृष्टिकर्ता के ही हो गई है। जिस प्रकार कि इस आयत में कहा गया है : "क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं?" ज़ाहिर सी बात है कि यह असंभव है। हम कैसे बिना

सृष्टिकर्ता के पैदा हो जाएँगे?

दूसरी : हमने स्वयं अपने आप को पैदा कर लिया है। जिस प्रकार की इस आयत में कहा गया है : "या वे स्वयं पैदा करने वाले हैं?" यह भी नामुम्किन है। हमको पैदा किए जाने से पहले हम कैसे अपने आपको पैदा कर सकते हैं?

इस तरह अक़्ल के एतबार से तीसरा विकल्प ही बाक़ी रह जाता है, जिसके बारे में यह आयत चुप है, क्योंकि यह स्वीकृत है कि हमारा एक सृष्टिकर्ता है, जिसने हमें पैदा किया है।

इस तरह अक़्ल के द्वारा अल्लाह को जानते हैं।

इसी प्रकार हम प्रकृति के द्वारा भी अल्लाह को पहचान सकते हैं।

हम अपनी प्रकृति से अल्लाह की पहचान इस प्रकार कर सकते हैं कि इन मूर्तियों और प्रकृति (नेचर) में ब्रह्मांड को बनाने की शक्ति नहीं है, और न किसी बैक्टीरिया या इंसान को बनाने की शक्ति है, और न उनमें इस प्रकार मानव शरीर के कार्यों को समायोजित करने तथा परमाणु से आकाशगंगा तक निर्माण में महारत हासिल करने की क्षमता है।

यह मूर्तियाँ, काफ़िर लोग जिनकी पूजा करते हैं तथा यह नेचर, जिसपर नास्तिक ईमान रखते हैं, दोनों को किसी सृष्टिकर्ता की आवश्यकता है।

मुर्तियाँ या नेचर अपने किसी मामले के मालिक नहीं हैं। न वे आपके अंदर अद्भुत संख्या में मौजूद हार्मोन्स को सुनियोजित करने की क्षमता

रखते हैं और न उनमें आनुवांशिक कोड डालने की क़ुदरत है और न हर जीवित कोशिका के अंदर लाखों जानकारियाँ प्रदान करने की शक्ति होती है, और न ही वे कुछ पैदा कर सकते हैं, यहाँ तक कि अपने आप को भी नहीं।

इन चमत्कारों से भरपूर इस दुनिया की रचना करने वाला महान, सब कुछ जानने वाला, सब पर प्रभुत्व रखने वाला, तत्वज्ञ एवं हर अवगुण से पाक रचनाकार है।

उसके बाद यह पुस्तिका नास्तिकों के कुछ संदेहों, एवं सृष्टिकर्ता के अस्तित्व पर अक़्ली एवं प्रकृतिक प्रमाणों को भ्रमित करने की उनकी कोशिशों पर चर्चा करती है।

उनकी सब से प्रसिद्ध गुमराही बिग बैंग थ्योरी है, और यह उनके संभावनाओं के नियमों को न समझ पाने या मूर्खता के कारण है, इसलिए की अचानक किसी चीज़ के प्रकट होने की दो अविभाज्य स्थितियाँ होती हैं।

और वो हैं, समय एवं स्थान।

महाविस्फोट के लिए समय की शर्त है, जब यह महाविस्फोट हो।

इसी प्रकार उसके लिए भौतिक उपस्थिति आवश्यक है, जिसमें वह अपना प्रभाव डाले।

इस प्रकार हम कैसे यह मान सकते हैं कि इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति महाविस्फोट के कारण हुई है, जबकि यह ब्रह्मांड न मालूम समय व स्थान

से क़ायम है, और फिर यह महाविस्फोट की घटना से भी आरंभ नहीं हुआ है।

फिर यह पुस्तिका धर्म की आवश्यकता, उसके मतलब, सारे संसारों के रब के सामने आत्मसमर्पण करने एवं उसके अधीन हो जाने की ज़रूरत पर कुछ अक़्ली प्रमाण पेश करती है। इस प्रकार अल्लाह के लिए आत्मसमर्पण तथा अनुसरण के द्वारा उसका अधीन हो जाना ही धर्म की वास्तविकता है।

आप अल्लाह के लिए झुकते हैं, अपने पैदा करने, रोज़ी देने वाले, हर लाभ, नेमत और मार्गदर्शन के द्वारा आप पर एहसान करने वाले की इबादत करते हैं।

इबादत, यह अपने बंदे पर अल्लाह का अधिकार है, वह अल्लाह पाक, जिसने हमें पैदा किया है, हमें ज़िन्दा किया है, हमें आजीविका देता है, हमारा मार्गदर्शन करता है एवं हमारी ओर अपने संदेशवाहक को भेजा है, ताकि हमें आज़माए कि हममें से किसका कार्य बेहतर है? इस प्रकार इबादत उसी अल्लाह का हम पर अधिकार है। "जिसने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें किसका कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली, अति क्षमावान् है।" [सूरा अल-मुल्क : 2] पुस्तिका अपने दूसरा पड़ाव में इस्लाम के सही धर्म होने पर कुछ प्रमाण पेश करती है, एवं इस हक़ीक़त को बयान करती है कि अल्लाह मानव जाति से इस्लाम के अतिरिक्त कोई दूसरा धर्म स्वीकार नहीं करेगा। उच्च एवं महान अल्लाह कहता है : "जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म ढूँढे, उसका धर्म कदापि स्वीकार नहीं किया

जाएगा और वह परलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।" [सूरा आल-ए-इमरान: 85]

अतः इस्लाम ही वह धर्म है, जिसके साथ अल्लाह ने सभी नबियों और रसूलों को भेजा है।

इस्लाम की मुख्य विशेषता यह है कि यह अल्लाह के लिए आत्मसमर्पण एवं केवल एक अल्लाह की इबादत के अर्थ को शामिल है।

इस्लाम एक संपूर्ण शरीयत है, जो अल्लाह के लिए आत्मसमर्पण की ओर बुलाती है।

वह अकेला धर्म है, जो अल्लाह की तौहीद की ओर बुलाता है। यही तौहीद है, जिसका पैग़ाम लेकर सभी नबी आए।

सभी नबी एकेश्वरवाद की आस्था पर क़ायम थे, यद्यपि उनकी शरीयतें भिन्न थीं।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "और हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजे, उनकी ओर वह्य भेजी कि मेरे अलावा कोई सच्चा पूज्य नहीं है, तो तुम सब मेरी ही इबादत करो।" [सूरा अल-अंबिया : 25]

आज इस एकेश्वरवाद पर इस्लाम के सिवा कोई भी धर्म क़ायम नहीं है। दूसरी शरीयतों के मानने वालों के यहाँ कुछ न कुछ शिर्क पाया जाता है। कम हो या ज़्यादा। नबियों की मौत, एवं लोगों के एकेश्वरवाद की राह को छोड़ने के बाद, समय गुज़रने के साथ-साथ लोग शिर्क को अपनाने लगा, यहाँ तक कि आज स्थिति यह है कि इस्लाम के सिवा कोई भी धर्म शुद्ध

एकेश्वरवाद के पथ पर क़ायम नहीं है।

फिर इस बात पर कि कैसे आदमी मुसलमान होता है, इस्लाम का अर्थ एवं उसकी आवश्यकता क्या है, इसके बयान पर यह पुस्तिका समाप्त होती है।

इस्लाम ने अस्तित्ववाद के सभी प्रश्नों का उत्तर दिया है, जो हर आदमी के दिमाग में चलता है कि हम कहाँ से आए हैं, हम इस दुनिया में किस लिए हैं और फिर हमारा अंजाम क्या होगा?

इस्लाम ने इन सभी प्रश्नों का उत्तर क़ुरआन की एक आयत में दिया है।हमारे पाक रब ने कहा है : "तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी इबादत (वंदना) न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया है और तुम सब उसी की ओर लौटाए जाओगे?" [सूरा यासीन : 22]

हम कहाँ से आए? तो उसका उत्तर दिया गया कि अल्लाह ने हमें पैदा किया है।

हम कहाँ जाने वाले हैं? तो उसके जवाब में कहा गया कि अल्लाह ही की ओर लौटकर जाना है एवं अपने कर्मों का हिसाब देना है। (उसी की ओर लौटाए जाओगे।)

हम इस दुनिया में क्यों आए हैं? तो उसको स्पष्ट किया गया कि अल्लाह की इबादत के लिए, और ताकि हमारी परीक्षा हो।

हम क्यों अल्लाह की इबादत करें? तो यह स्वाभाविक है कि हम उसी की आराधना करें, जिसने हमें पैदा किया है। यह बंदा एवं उसके रब के

बीच का स्वभाविक संबंध है कि बंदा अपने रब एवं पैदा करने वाले की इबादत करे। "तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी इबादत (वंदना) न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया है?" केवल एक आयत में मानव को परेशान करने वाले तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दे दिए गए हैं। "तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी इबादत (वंदना) न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया है और तुम सब उसी की ओर लौटाए जाओगे?" [सूरा यासीन : 22]

इस्लाम पूरे विश्व के लिए अल्लाह की शरीयत है।

इस्लाम का अर्थ है कि बंदा अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दे, आज्ञाकारिता के द्वारा उसके सामने नतमस्तक हो, झुके एवं अपने सृष्टिकर्ता एवं मालिक के अधीन हो जाए।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "और जो समर्पित कर दे स्वयं को अल्लाह के तथा वह एकेश्वरवादी हो, तो उसने पकड़ लिया सुदृढ़ कड़ा।" [सूरा लुक़मान : 22] इस्लाम, मतलब अपने जीवन में हर छोटे-बड़े कार्य में अल्लाह ही की बंदगी का ख्याल रखना। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "आप कह दें कि निश्चय ही मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण, सारे संसारों के रब अल्लाह के लिए है। जिसका कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।" [सूरा अल-अनआम : 163]

मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी, मेरा जीना एवं मेरा मरना, सब सारे जहानों के रब के लिए, मैं जो कुछ करता हूँ, वह अल्लाह के लिए, मेरी नमाज़ अल्लाह के लिए, माँ-बाप का अज्ञापालन अल्लाह के लिए, मेरा पढ़ना-

लिखना सीखना एवं लोगों के लिए लाभकारी बनना भी अल्लाह के लिए, यहाँ तक कि हम सोते भी इसलिए हैं कि कल हम अल्लाह के आदेशों का पालन अधिक ऊर्जावान होकर करें।

हर काम में अल्लाह की बंदगी, यही अल्लाह के लिए अपने आपको समर्पित करने की महत्वपूर्ण निशानियों एवं प्रदर्शनों में से है।

जानकारी की भूख, हमारे लिए महत्वपूर्ण जानकारी, इसकी आवश्यकता को केवल इस्लाम ही पूरा कर सकता है।

जबकि नास्तिक्ता इंसान के लिए पर्याप्त नहीं है, जो जानता है कि मरने के लिए ही उसकी पैदाइश हुई है।

यह पुस्तिका नास्तिकता की समस्याओं के बारे में पर्याप्त वैज्ञानिक एवं तार्किक जानकारी, साथ ही इस्लाम के सही धर्म होने के प्रमाण प्रस्तुत करती है।

और यह प्रश्न एवं उत्तर की सूरत में है।

तो लीजिए हम अल्लाह के नाम से शुरू करते हैं।

1- नास्तिकता का अर्थ क्या है?

उत्तर : नास्तिकता का अर्थ है : किसी अलौकिक शक्ति पर विश्वास करने से इंकार करना।

एक नास्तिक सृष्टिकर्ता, नबियों और मृत्यु के बाद दोबारा पैदा होने को नकारता है।

2- आप नास्तिकता के अंदर क्या कमी पाते हैं?

उत्तर : नास्तिकता धार्मिक विश्वास की तुलना में बहुत अधिक विश्वास की मांग करती है,

परन्तु यह भ्रामक धारणाओं और झूठी कल्पनाओं पर आधारित विश्वास है। इसके विपरीत धार्मिक विश्वास प्राकृतिक स्वीकृतियों, निश्चित धारणाओं, तर्कसंगत वरीयताओं एवं शरई प्रमाणों पर आधारित है, जिन्हें हम स्वयं अपनी आँखों से देखते हैं।

यहाँ तक कि आप नास्तिक हो जाएँगे और सोचेंगे : क- नाचीज़ नाचीज़ से मिली और एक बहुत बड़ी चीज़ बन गई। एक ख़ूबसूरत, सटीक कैलिब्रेशन एवं महत्वपूर्ण सीमाओं के साथ हमारे इस विशाल ब्रह्मांड की उत्पत्ति हो गई। ख- महाविस्फोट ने महत्वपूर्ण सीमाओं एवं भौतिक स्थिरांक को जन्म दिया, जबकि महाविस्फोट के लिए समय एवं स्थान का होना ज़रूरी है, और यह ब्रह्माण्ड अनगिनत युग एवं स्थान से एवं महाविस्फोट के बग़ैर क़ायम है। ग- ज़मीन के पहले वातावरण ने ज़िन्दगी, और बैक्टेरिया एवं इंसान को जन्म दिया, जबकि मानव दिमाग इतना विकास करने के बावजूद जीवन की एक छोटी-सी शक्ल भी नहीं पैदा कर पा रहा है। घ- मूल नैतिकता, सांसारिक हित के स्तर पर भौतिक बोझ और नुकसान का प्रतिनिधित्व करती है। यह भौतिकवाद के उत्पादों एवं प्रदानों में से एक है। नास्तिक होने का अर्थ है कि आपको इन विसंगत बातों पर ईमान रखना है, ताकि आप नास्तिकता में अपनी शुरूआत कर सकें।

ञ- नास्तिकता में ऐसा कोई वैज्ञानिक या भौतिक दस्तावेज नहीं है,

जो पृथ्वी के सभी लोगों के विनाश को रोकता हो।

भौतिकवादी दुनिया सही और ग़लत को नहीं जानती है।

इसलिए, पृथ्वी के सभी लोगों का विनाश, उन्हें नास्तिक बनाकर पुनर्जीवित करने के बराबर है।

नास्तिकता का आधार भी ईमान पर ही है। मगर यह ऐसा ईमान है, जिससे ज्ञान, प्रमाण, विवेक या चरित्र जैसी चीज़ें गायब हैं।

3- सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का क्या प्रमाण है?

उत्तर : इसके बहुत-से प्रमाण मौजूद हैं, मगर यहां हम दो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं :

1- उत्पन्न करने का प्रमाण

2-ध्यान रखने और प्रवीणता का प्रमाण

4- उत्पन्न करने के प्रमाण का क्या अर्थ है?

उत्तर : उत्पन्न करने के प्रमाण का अर्थ है :

हर ऐसी चीज़ का, जो अनस्तित्व से अस्तित्व में आई, कोई अस्तित्व में लाने वाला ज़रूर होगा।

इस तरह हमारे पास पवित्र सृष्टिकर्ता के मौजूद होने के अनगिनत प्रमाण मौजूद हैं।

ब्रह्मांड का हर कण सृष्टिकर्ता को प्रमाणित करता है, क्योंकि यहाँ

अस्तित्व में आने वाली हर नई चीज़ सृष्टिकर्ता एवं रचयिता का पता देती है।

जब आप इस दुनिया पर नज़र दौड़ाएँगे, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि यह फैल रही है एवं परिवर्तनशील है। यह हमेशा नहीं रहेगी और हमेशा से है भी नहीं। इसी प्रकार यह आत्मनिर्भर भी नहीं है। यही वह बात है, जो आपको इस बात पर सोचने पर मजबूर कर देगी कि इसका अवश्य कोई न कोई सृष्टिकर्ता है। इस तरह केवल इस दुनिया पर नज़र डालने मात्र से आप इसके पैदा करने वाले के बारे में विचार करने पर विवश हो जाएंगे।

इसी लिए क़ुरआन की बहुत सारी आयतों ने दुनिया एवं आस-पास की चीज़ों पर विचार करने का आह्वान किया है। अल्लाह तआला ने कहा है : "(हे नबी!) उनसे कहो कि उसे देखो, जो आकाशो तथा धरती में है, और निशानियाँ तथा चेतावनियाँ उन्हें क्या लाभ दे सकती हैं, जो ईमान (विश्वास) न रखते हों?" [सूरा यूनुस : 101] एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "क्या उन लोगों ने अपने दिलों में विचार नहीं किया कि अल्लाह ने आकाशों और धरती को और उन दोनों के बीच मौजूद सारी चीज़ों को सत्य के साथ और एक निश्चित अवधि के लिए ही पैदा किया है?! और निःसंदेह बहुत-से लोग अपने रब से मिलने का इनकार करते हैं।" [सूरा रूम : 8] एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "क्या वे लोग आकाशों एवं धरती के प्रशासनिक कार्यों एवं अल्लाह की दूसरी सृष्टियों पर विचार नहीं करते?" [सूरा अल-आराफ : 185]

अतः हर नई पैदा होने वाली चीज़ इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि

उसका कोई पैदा करने वाला है।

5- देखभाल और प्रवीणता के प्रमाण का क्या अर्थ है?

उत्तर : देखभाल और प्रवीणत का अर्थ है :

हर चीज़ जो अस्तित्व में है, क्वार्क्स -सबसे छोटे भौतिक आकार, जिनसे प्रमाणु संरचनाओं को आकार मिलता है - से लेकर आकाशगंगा तक, हर एक के पास कोई न कोई कार्यात्मक जटिलता है।

अर्थात हर कोई एक विशेष काम एवं निर्धारित मिशन को अंजाम देता है।

प्रकृति में प्रत्येक कार्यात्मक जटिलता मात्र अस्तित्व की अतिरेक है।

इस तरह अस्तित्व एक दर्जा है।

जबकि वस्तू के अंदर जो जटिलता मोजूद है, वह मात्र अस्तित्व की अतिरेक है।

आपके इर्द-गिर्ज जो कुछ भी है, वह निश्चित आकार में डिजाइन किया हुआ है, ताकि वह एक निश्चित कार्य को अंजाम दे सके।

इस तरह आपके आस-पास की हर चीज़ में एक कार्यात्मक जटिलता है

और यह कार्यात्मक जटिलता आविष्कार करने के कार्य का प्रमाण है।

इस प्रकार आविष्कार करने वाला का होना ज़रूरी है।

उदाहरण के तौर पर एक "बल्ब" एक कार्यात्मक जटिलता का प्रतिनिधित्व करता है।

एक बिजली का बल्ब निम्नलिखित चीज़ों से मिलकर बनता है :

1- पलीता।

2- लीड तार : जो बिजली को पलीता तक पहुँचाता है।

3- स्थिर गैस : जो पलीता की रक्षा करती है और उससे या बिजली से व्यवहार नहीं करती है।

4- कांच : जो हवा को प्रवेश करने से या स्थिर गैस को बाहर निकलने से रोकती है, वरना पतीला जल जाएगा।

5- बल्ब का बेस : जो बल्ब को संलग्न करे और विद्युत प्रवाह के लिए पथ बनाए।

आपने देखा कि बिजली के बल्ब की एक व्यवस्था है, जिसमें एक जटिलता है, जिसे सरल नहीं किया जा सकता। साथ ही इसमें एक प्रारंभिक अक़्ली प्रमाण है, जो उत्तम कारीगरी की ओर इशारा करता है।

अब जो व्यक्ति बल्ब की इस उत्तम कारीगरी से इनकार करे या संयोग से इसके प्रकट होने की बात कहे, तो उसी से इसका प्रमाण मांगा जाएगा।

जिसने बल्ब बनाया, वह बिजली, उसके विद्युत प्रवाह, बल्ब के लाभ एवं पलीता की संवेदनशीलता को अच्छी तरह जानता था। इसलिए बल्ब का अस्तित्व खुला प्रमाण है कि उसका कोई माहिर बनाने वाला है।

हम यह नहीं कह सकते कि वह यूँ ही बन गया है, क्योंकि दूसरे बल्ब भी मौजूद हैं, जो आकार में उससे बिल्कुल भिन्न हैं।

इसी आधार पर हम पाते हैं कि इन्सान जैसी कार्यात्मक रूप से जटिल वस्तु का कोई बनाने वाला होता है।

क्योंकि बल्ब तो पाँच चीज़ों से बनता है,

जबकि मनुष्य की प्रत्येक कोशिका में 4 अरब घटक होते हैं।

4 अरब घटक "अक्षर" जो एक जीव के कार्यों को अंजाम देते हैं, जिन्हें अनुवांशिक कूट, जीन या डीएनए कहा जाता है। ये अक्षर हर एक कोशिका की गुठली में छिपे होते हैं।

अब यदि आप समझते हैं कि पाँच चीज़ों से बने बल्ब का कोई बनाने वाला है और ख़ुद आपका कोई सृष्टिकर्ता नहीं है, तो यह आपकी परेशानी है।

"क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या वे स्वयं पैदा करने वाले हैं?" [सूरा अल-तूर : 35]

आपके आस-पास मौजूद हर वस्तू में जटिलता है। प्रकृति में, परमाणु में, खगोल में, आपके शरीर में, हर एक में कार्यात्मक जटिलता पाई जाती है। इससे खाली कोई चीज़ नहीं है।

ब्रह्माण्ड की हर चीज़ में, चाहे एटम हो या कण, सब में कार्यात्मक जटिलता एवं उसके कुछ कार्य पाए जाते हैं।

अल्लाह तआला ने कहा है : "निःसंदेह आकाशों और धरती की रचना तथा रात और दिन के बदलने में, तथा उन नावों में जो लोगों को लाभ देने वाली चीज़ें लेकर सागरों में चलती हैं, और उस पानी में जो जो अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर दिया और उसमें हर प्रकार के जानवर फैला दिए, तथा हवाओं को फेरने (बदलने) में और उस बादल में, जो आकाश और धरती के बीच वशीभूत किया हुआ है, (इन सब चीज़ों में) उन लोगों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, जो समझ-बूझ रखते हैं।" [सूरा अल-बक़रा : 164]

इस बारे में बहुत-सी आयतें मौजूद हैं,

जिनसे वही व्यक्ति लाभ उठा सकता है, जो अपनी बुद्धि का प्रयोग करता हो। "और बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।" [सूरा आल-ए-इमरान : [85]

जो अपनी बुद्धी का प्रयोग करेगा, दुनिया में आविष्कार के साक्ष्य को तलाश करेगा एवं इन अस्तित्व के कार्यों एवं उनकी व्यवस्ता (देख-रेख एवं प्रवीणता की निशानी) पर विचार करेगा, तो वह ज़रूर उनके बनाने वाले को पा जाएगा।

6- इंसान या दूसरे जीवों का एक बहुत ही सरल पूर्व अस्तित्व का स्रोत (जिससे वह विकसित हुए हों) क्यों नहीं हो सकता है?

उत्तर : इसमें दो परेशानियाँ हैं :

पहली परेशानी : जीवित वस्तुओं के एक आकार से दूसरे आकार में

परिवर्तित होने का एक भी प्रमाण नहीं है, इस विशाल काल्पनिक छलांग के अलावा कि मनुष्य पहले से मौजूद किसी प्राणि से विकसित हुआ है।

नास्तिक कैसे इस मनगढ़ंत बात पर ईमान रखते हैं, जो किसी भी स्पष्ट प्रमाण से खाली है, जबकि हमारे धार्मिक एवं अक़्ली प्रमाणों का अस्वीकार कर देते हैं?

दूसरी परेशानी : न्यूनतम जीन सिद्धांत Minimum gene set concept के अनुसार किसी भी जीवित सृष्टि के लिए असंभव है कि उसके उंदर दो सौ से कम जीन पाए जाएँ।

न्यूनतम जीन सीमा, जीन की वह न्यूनतम संख्या है, जिसके बग़ैर कोई भी प्राणी ज़िन्दा नहीं रह सकता।

न्यूनतम निर्धारित जीन संख्या से एक भी जीन कम में कोई भी प्राणी जी नहीं सकता है।

जीन एक सूचनात्मक पट्टी है, जिसमें बड़ी संख्या में आनुवंशिक कोड होते हैं, जो जानकारी को सांकेतिक शब्दों में बदलते हैं।

जीवन के लिए जीन की एक न्यूनतम सीमा है। वह इस तरह कि इन जीनों का एक समूह ऊर्जा के लिए होता है। इस लिए कि कोई भी प्राणी ऊर्जा के बिना जीवित नहीं रह सकता है। जीनों का एक समूह भोजन के लिए कोड करता है, कुछ जीन प्रजनन के लिए कोड करते हैं, जबकि अन्य जीन जीवन के मूलभूत कामों को कोड करते हैं।

जीवन के लिए आवश्यक जीनों की न्यूनतम सीमा के अनुसार

वैज्ञानिकों ने यह तय किया है कि यह दो सौ से कम जीन नहीं हो सकते।

क्रेग वेंटर Craig Venter फ़ाउंडेशन इस नतीजा पर पहुँचा है कि जीनों की न्यूनतम संख्या 382 जीन से कम नहीं होनी चाहिए।

वैज्ञानिकों ने यह भी पाया है कि पृथ्वी पर सबसे छोटे जीव माइकोप्लाज्मा में 468 जीन होते हैं।

यदि मामला केवल एक पदार्थ का होता एवं दुनिया सिर्फ एक भौतिक प्रणाली होती, तो हमें शून्य जीन से शुरू करना होता, जब हम हाइड्रोजन से इंसान तक की यात्रा करना चाहते,

परन्तु विज्ञान हमें बताता है कि कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जिसे शून्य जीन या एक जीन कहा जाए या एक सौ जीन कहा जाए। विज्ञान कहता है : हमें कम से कम जानकारी के विशाल सेट की आवश्यकता है, वरना कोई भी ज़िन्दा जीव कभी भी प्रकट ही नहीं होता।

प्रकृति में कुछ भी आदि नहीं है, लेकिन प्रत्येक प्रणाली एक स्वतंत्र आकर्षण के साथ शुरू होती है।

सूचना प्रणाली में आकर्षण बना रहेगा जो जीवों के प्रकट होने से पहले उन्हें कूटबद्ध करता है। यह आकर्षण हमेशा नास्तिकता एवं अल्लाह के सृष्टिकर्ता होने का इंकार करने वाले के लिए एक रोड़ा बना रहेगा।

यहाँ 4 अरब विशेष घटक की बात है। यह घटक (जेनेटिक कोड) हर इंसान की हर कोशिका के अंदर छिपा होता है, ताकि सटीक जैविक कार्यों का उत्पादन कर सके।

नास्तिक यह गुमान करता है कि इस ब्रह्माण्ड की शुरूआत शून्य जीन से हुई है, लेकिन न्यूनतम जीन की थ्योरी ने उसकी सोच को ख़त्म कर दिया है।

जीवित जीव पहले क्षण से ही कार्यात्मक रूप से जटिल दिखाई देते हैं, अन्यथा वे शुरू से ही प्रकट नहीं होते।

7- देखभाल और प्रवीणता के प्रमाण के क्या उदाहरण हैं?

उत्तर : इसके अनगिनत उदाहरण हैं,

जिन्हें पृथ्वी के दस्तावेज़ों में समाया नहीं जा सकता है।

"और यदि धरती में जितने वृक्ष हैं, सब क़लम बन जाएँ तथा समुद्र उसकी स्याही हो जाए, जिसके बाद सात समुद्र और हों, तो भी अल्लाह के शब्द समाप्त नहीं होंगे। निःसंदेह अल्लाह अत्यंत प्रभुत्वशाली, पूर्ण हिकमत वाला है।" [सूरा लुक़मान : 27]

ब्रह्माण्ड का हर कण उसकी ओर से ध्यान रखे जाने का प्रमाण है। हम इस वास्तविकता को आज या कल जान ही जाएंगे।

क- इंसुलिन - ग्लूकोज-पाचन हार्मोन - अग्न्याशय द्वारा उसी मात्रा में चीनी के साथ स्रावित होता है, जिसे आपने खाया था।

ख- हृदय की रक्त पंप करने की शक्ति, जो खर्च किए गए प्रयास के अनुसार मांसपेशियों द्वारा आवश्यक ऊर्जा के बराबर होती है।

ग- आपके पेट के वाल्व, ताकि खाना आपके मुंह में वापस न आ

जाए और आपको तकलीफ़ न पहुँचाए।

घ- निकलने का वाल्व, ताकि आपका कपड़ा किसी भी समय खराब न हो।

ड़- आपकी खोपड़ी की हड्डियाँ, जो एक दूसरे से नहीं मिलतीं, यहाँ तक कि आप अपनी माँ के पेट से आसानी से निकल आते हैं। यदि ये एक-दूसरे से मिल जाएँ तो उनको तोड़ने के बाद ही आप अपनी माँ के पेट से निकल सकते हैं। इनका विकास तब तक पूरा नहीं होता, जब तक आपके दिमाग का विकास पूरा नहीं हो जाता।

च- आपकी नसों के सभी अक्षतंतु, जो विद्युत संकेतों को संचारित करते हैं, एक इन्सुलेट परत से ढके होते हैं, -जैसे हम अब बिजली के तारों के साथ करते हैं- ताकि विद्युत संकेत न भटके, गुम न हो या आपकी परेशानी का कारण न बने।

छ- इलेक्ट्रॉन एक हजार किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से नाभिक के चारों ओर चक्कर लगाता है। अन्यथा यह सकारात्मक नाभिक के साथ आकर्षण बल के कारण नाभिक के अंदर गिर जाए और ब्रह्मांड शुरू होने से पहले ही ढह जाए। यही परमाणु गठन के लिए आदर्श गति है।

ज- जब दो हाइड्रोजन परमाणु आपस में जुड़ते हैं, तो हाइड्रोजन के द्रव्यमान का 0.007% ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है। यदि यह द्रव्यमान 0.007% के बजाय 0.006% हो, तो प्रोटॉन न्यूट्रॉन के साथ फ्यूज नहीं करेगा, और ब्रह्मांड केवल हाइड्रोजन से भर जाएगा, और बाकी तत्व प्रकट नहीं होंगे। यदि ऊर्जा में परिवर्तित द्रव्यमान 0.007% के बजाय 0.008%

हो, तो सहसंयोजन बहुत तेज़ होगा, जिससे ब्रह्मांड से हाइड्रोजन तुरंत गायब हो जाएगा, और जीवन असंभव हो जाएगा। इस लिए यह संख्या 0.006% और 0.008% के बीच होनी चाहिए।

झ- इलेक्ट्रॉन द्रव्यमान न्यूट्रॉन द्रव्यमान के 0.2% का प्रतिनिधित्व करता है और यह परमाणु के निर्माण के लिए मानक द्रव्यमान है।

ञ- अंकुरण के बाद, कलियाँ प्रकाश के स्रोत की ओर आकर्षित होती हैं और जड़ें नीचे की ओर रुख करती हैं, क्योंकि कलियां प्रकाश के प्रति अतिसंवेदनशील होती हैं, प्रन्तु उन्हें अपना काम करने के लिए आवश्यक सभी जानकारी बीज के अंदर एन्कोडेड होती है। वहाँ ऐसे हार्मोन होते हैं जो पौधे के ऊपरी और पार्श्व विकास को और जड़ों की दिशा को नियंत्रित करते हैं, जो सभी बीज के भीतर ही एन्कोडेड होते हैं।

ट- जब आप स्वादिष्ट फल खा रहे होते हैं और फिर सूखे, बेस्वाद बीज को अपने से दूर फेंक रहे होते हैं, आप उस फल को उसके जीनों को पारित करने की अनुमति देते हैं, क्योंकि फल आपको एक स्वादिष्ट स्वाद देता है जबकि यह अपने जीन को छुपाता है -अपने जीवन की असल को- एक सूखे, चिकने बीज के दिल में, जो आपको लुभाता नहीं है। जैसे ही यह बीज जमीन पर डाला जाता है, और जब उसके लिए सही परिस्थितियां उपलब्ध होती हैं, तो यह शाखाओं, टहनियों और जड़ों के साथ एक फलदार वृक्ष बनना शुरू हो जाता है। यह सब उन पौधों में होता है, जो किसी चीज़ से अनजान होते हैं।

ठ- उस गूंगे, बहरे फल की जानकारी को किसने नियंत्रण किया और

उसमें चीनी की मात्रा को आपकी पसंद के अनुसार किसने समायोजित किया?

फिर, किसने बीज को अस्वीकार्य और अरुचिकर बनाया कि आप उसे नापसंद करते हैं एवं अपने से दूर फेंक देते हैं?

फिर, किसने अपने सभी विवरणों और कार्यों के साथ एक नया पौधा बनाने के लिए पर्याप्त आनुवंशिक जानकारी के साथ बीज को लोड किया?

ड- हमने हाल ही में पाया कि जिस स्थिरता में हम आनंद में रहते हैं, वह समग्र रूप से ब्रह्मांड के द्रव्यमान का उत्पाद है।

जड़ता का क्या मतलब है?

अगर आप कार में सवार हों और अचानक कार रुक जाए, तो क्या होता है?

आप आगे की ओर झुकते हैं! क्या ऐसा नहीं है?

इसी को जड़ता या Inertia कहते हैं।

यदि हमारी दुनिया की जड़ता अब की तुलना में कम होती, तो हवा का छोटा से छोटा झोंका भी चट्टानों को हिला सकता था और इस प्रकार हम दुनिया में लगातार हर तरह की चीज़ों की चपेट में रहते।

और यदि निष्क्रियता अब की तुलना में अधिक होती, तो हम अपनी

उंगलियां तक नहीं हिला पाते।[1]

जड़ता या जड़ता का बल द्रव्यमान पर निर्भर करता है।

जिस चीज़ ने भौतिकविदों को आश्चर्य में डाला, वह यह है कि हमारे सौर मंडल को समाहित करने वाली आकाशगंगा मिल्की वे का द्रव्यमान केवल 0.1 प्रति मिलियन से जड़ता को नियंत्रित करने में भाग लेता है, जबकि पृथ्वी का द्रव्यमान जड़ता को केवल 0.001 प्रति मिलियन से समायोजित नहीं करता है।

जिस पूर्ण जड़त्व के फल स्वरूप हम जी रहे हैं और जिसके माध्यम से हम अपनी सभी गतिविधियों को अंजाम देते हैं, वह समग्र रूप से ब्रह्मांड की ऊर्जा के योग का उत्पाद है।

“तथा हमने आकाश और धरती को तथा उन दोनों के बीच की चीज़ों को व्यर्थ नहीं पैदा किया। यह तो उन लोगों का गुमान है, जिन्होंने कुफ़्र किया। तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उनके लिए आग के रूप में बड़ा विनाश है।" [सूरा स़ाद : 27]

जैसे-जैसे विज्ञान का विस्तार होता जाएगा, ज्ञान के चमत्कार और सृष्टि की सूक्ष्मताएँ सामने आती जाएंगी।[2]

---

[1] Nature's Destiny: How the Laws of Biology Reveal Purpose in the Universe, Michael Denton.

[2] इस विषय पर माइकल डेंटन ने अपनी पुस्तक "नेचरस डेस्टिनी" में विस्तार से चर्चा की है, और पुस्तक का अनुवाद "दार अल-कातिब" से प्रकाशित हुआ है।

ध- फिर आँख की ही बात कीजिए :

यह के अनमोल नेमत है। अल्लाह तआला ने कहा है : "क्या हमने उसके लिए दो आँखें नहीं बनाई हैं?!" [सूरा अल-बलद : 8]

आँख की सूक्ष्मदर्शी पाँच सौ छिहत्तर मेगा-पिक्सेल के बराबर है।

आँख में दुनिया का सबसे शुद्ध लेंस होता है।

रेटिना में फोटोरिसेप्टर का आकार आधा वर्ग मिलीमीटर से अधिक नहीं होता है, और यह विभिन्न आयामों के दस मिलियन रंगों के बीच अंतर करता है। निःसंदेह यह एक चमत्कार और अद्भुत दिव्य रचना है।

जब आप अपने सामने कुछ देखते हैं और प्रकाश रेटिना पर पड़ता है, उस समय, कई जटिल रासायनिक प्रक्रियाएं चल रही होती हैं, जो अंततः विद्युत प्रवाह उत्पन्न करती हैं। यह धारा आपके रेटिना से तंत्रिका तारों के माध्यम से आपके मस्तिष्क तक जाती है। यहां मस्तिष्क इस विद्युत प्रवाह की आवृत्ति को एक दृष्टि के रूप में व्याख्या करता है। यह ऐसा है, जैसे मस्तिष्क के पास पहले से एक एकीकृत शब्दकोश मौजूद है, जो उस तक पहुँचने वाली विद्युत प्रवाह को एक दृष्टि के रूप में परिवर्तित करता है।

यह एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात है। काश आप इस पर विचार करते!

कल्पना कीजिए : यह मस्तिष्क एक अंधेरा बोन बॉक्स के अंदर है और वह अंधेरा बॉक्स खोपड़ी है-

आपके मस्तिष्क तक केवल विद्युत धाराएं पहुँचती हैं,

मस्तिष्क इस धारा को दृष्टि के रूप में कैसे व्याख्या करता है?

उसने आपको दृष्टि कैसे दी?

यह चमत्कार पल में ही पर्याप्त हो जाता है केवल आपके आँख खोलने और देखने से ही!

यही मामला कान का भी है :

जहां ध्वनि तरंगें आपके कर्णपटल में प्रवेश करती हैं, ईयरड्रम इन तरंगों को यांत्रिक गति में बदल देता है, फिर यह यांत्रिक गति मध्य कान में तीन छोटी हड्डियों के माध्यम से आंतरिक कान तक जाती है, जो इसे विद्युत प्रवाह में परिवर्तित करती है।

यह विद्युत प्रवाह अब आंतरिक कान से मस्तिष्क तक पहुँचती है, जिससे मस्तिष्क इस विद्युत प्रवाह को ध्वनियों में बदलना शुरू कर देता है, जिससे आप ध्वनि सुन सकते हैं।

यह सब एक सेकेंड से भी कम समय में होता है "और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों से इस हाल में निकाला कि तुम कुछ न जानते थे। और उसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, ताकि तुम शुक्रिया अदा करो।" [सूरा नह्ल : 78]

कल्पना कीजिए कि मस्तिष्क हर पल आंख, कान, स्पर्श, स्वाद, गंध और शरीर के विभिन्न हिस्सों से हजारों विद्युत संकेत प्राप्त करता है, ताकि वह इन सभी संकेतों के बीच सटीक रूप से अंतर करे कि कौन क्या है। "ये अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ क्या उत्पन्न किया है उन्होंने, जो

उसके अतिरिक्त हैं? बल्कि अत्याचारी खुले कुपथ में हैं।" [सूरा लुक़मान : 22] "यह अल्लाह की रचना है, उसने प्रत्येक चीज़ को सुदृढ़ किया है, वह भली-भाँति सूचित है उस चीज़ से, जो तुम करते हो।" [सूरा नम्ल : 88]

अल्लाह की दी हुई नेमतों में से एक को भी कौन गिन सकता है?

अपने शरीर के हर जोड़ और हर हड्डी के बारे में सोचिए, जो आपको अपने अंदाज से हिलने-डुलने देती है!

चिकने जोड़ों के बारे में सोचें, जो आपको हड्डियों के बीच घर्षण के बिना और बिना घिसे-पिटे चलने की अनुमति देते हैं। इन जोड़ों में अल्लाह ने मशीनों के जोड़ों में रखे जाने वाले ग्रीस के जैसा एक तरल रखा है।

अल्लाह की नेमतों के बारे में सोचो, ध्यान करो और उस पाक व पवित्र अल्लाह की नेमतों के आभारी रहो। वह पाक व पवित्र है।

अल्लाह की नेमतें अनगिनत हैं। "क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने, जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, सबको तुम्हारे लिए वशीभूत[8] कर दिया है, तथा तुमपर अपनी खुली तथा छिपी नेमतें पूर्ण कर दी हैं?! और कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान, बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी रोशन पुस्तक के विवाद करते हैं।" [सूरा लुक़मान : 22]

8- कुछ नास्तिक देखभाल के प्रमाण की आलोचना करते हुए कहते हैं कि यहाँ रोग एवं भूकंप आदि कुछ ऐसी चीज़ें पाई जाती हैं, जो आदर्श नहीं हैं।

उत्तर : नास्तिकों की बातों के ही अनुसार, ब्रह्मांड में कुछ परिपूर्ण चीज़ों की अनुपस्थिति, पूर्णता के अस्तित्व को नकारती नहीं है।

वह इस प्रकार ब्रह्मांड में पूर्णता के अस्तित्व की पुष्टि करता है।

यदि कोई पूर्णता नहीं होती, तो नास्तिक को अपूर्ण चीजों के अस्तित्व का एहसास नहीं होता।

आप बिना डिज़ाइन की हुई दुनिया में किसी डिज़ाइन में खोट की बात कैसे कर सकते हैं? इसका मतलब है कि दुनिया प्लान के साथ तैयार हुई है।

जहाँ तक उन लोगों का दुनिया को अपूर्ण के रूप में वर्णन करने की बात है, तो यह उनके ज्ञान की कमी या चीजों के उद्देश्य को समझने में विफलता है।

अल्लाह पर विश्वास रखने वाले यह नहीं कहते कि ब्रह्मांड परिपूर्ण है और उसमें कोई विपदा नहीं आ सकती, बल्कि वे यह कहते हैं कि ब्रह्मांड परिपूर्ण है, उसमें कुछ भी बिना उद्देश्य के घटित नहीं होता है।

नास्तिक की स्थिति उस व्यक्ति के समान है जो अंतरिक्ष यान की पूर्णता से इनकार करते हैं, क्योंकि इसमें भारी मात्रा में पेट्रोलियम सामग्री

होती है, जिसमें कभी भी विस्फोट हो सकता है।[1]

दुनिया को सदैव रहने के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया है और न ही हमें इललिए पैदा किया गया है कि हम पूजनीय बन जाएँ?

बल्कि हमारी पैदाइश ही इसलिए हुई है कि अच्छाई और बुराई के द्वारा हमारी परीक्षा हो। "और हम अच्छी तथा बुरी परिस्थितियों से तुम्हारी परीक्षा करते हैं तथा तुम हमारी ही ओर लौटाए जाओगे।" [सूरा अल-अंबिया : 25]

अच्छा, बुरा या फ़ितना, यह सब अल्लाह की इच्छा एवं हिकमत के तहत ही आते हैं।

9- यह क्यों नहीं माना जा सकता है कि किसी भौतिक कारण द्वारा इस ब्रह्मांड का निर्माण हुआ? उदाहरण स्वरूप : एक और सभ्यता या कुछ और? केवल एक अनन्त पूज्य ही को विशेष रूप से क्यों स्रष्टा माना जाए?

उत्तर : इस्लामी विद्वानों द्वारा लगभग एक हजार साल से भी पहले स्थापित एक नियम है। वह नियम कहता है कि "दो कर्ताओं का तसलसुल अनिवार्य रूप से क्रियाओं के न होने की ओर ले जाता है।"[2]

---

[1] आधुनिक दर्शनशास्त्र में धर्म की आलोचना, डा० सुलतान अल-उमैरी, पीएचडी थैसिस

[2] आधुनिक दर्शनशास्त्र में धर्म की आलोचना, डा० सुलतान अल-उमैरी, पीएचडी शोधलेख

दो कर्ताओं का तसलसुल अर्थात एक से अधिक रचनाकार। इस प्रश्न में कि हमारे पास एक अलग सभ्यता है और इससे पूर्व एक सभ्यता थी जिसने इसे उत्पन्न किया है और उस सभ्यता के पूर्व एक सभ्यता थी, जिसने हम से पहले वाली सभ्यता को उत्पन्न किया था। इस तरह यह सिलसिला चलता रहेगा।

यह तसलसुल अनिवार्य रूप से क्रियाओं के न होने की ओर ले जाता है।

क्रियाओं के न होने का अर्थ है : ब्रह्मांड, मनुष्य या अन्य जीव का प्रकट न होना।

दो कर्ताओं का तसलसुल ब्रह्मांड या सृष्टि के प्रकट न होने की ओर ले जाता है।

यदि एक सभ्यता का उत्पन्न होना दूसरी सभ्यता पर निर्भर करता है, जिसने उसे पैदा किया है, फिर दूसरी सभ्यता तीसरी सभ्यता पर, जिसने उसे पैदा किया है, तो यह एक सिलसिला है जिसका कोई अंत नहीं है। इस प्रकार न यह सभ्यता प्रकट होगी, न उससे पहले वाली और न ही पहले से पहले वाली। न कोई सृष्टि प्रकट होगी और न ही कोई चीज़।

क्योंकि हर सभ्यता अपनी उत्पन्नता के लिए उस सभ्यता पर निर्भर है, जो उससे पहले थी। इस तरह न कोई सभ्यता प्रकट होगी और न कोई चीज़।

इसलिए सदैव से रहने वाला एक निर्माता का होना आवश्यक है,

जिसने सब कुछ बनाया हो!

यदि एक न ख़त्म होने वाला श्रृंखला होती और उस श्रृंखला की प्रत्येक कड़ी उससे पहले वाली कड़ी पर निर्भर करती, तो यक़ीनन न सृष्टियों, न कोई रचना और न ही किसी प्राणी का वजूद होता। क्योंकि इस तरह कर्ता अपने वजूद के लिए अपने पूर्व के कर्ता पर निर्भर होगा, एवं पूर्व वाले उसके पूर्व वाले पर, इस प्रकार किसी चीज़ का पाया जाना असंभव होगा।

अतः ज़रूरी है कि यह सिलसिला कहीं जाकर रुके।

यहां हमें निश्चित रूप से एक ऐसे अनन्त सृष्टिकर्ता पर विश्वास करना पड़ता है, जिसके पूर्व कुछ भी नहीं था।

10- हम ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले नियमों को जानते हैं और हम भूकंप के कारणों को भी अच्छी तरह जानते हैं। जब हम नियमों को जानते हैं, तो हमें सृष्टिकर्ता की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर : एक नास्तिक मानता है कि ब्रह्मांड के निर्माण और प्रकट होने के लिए सिद्धांत ही पर्याप्त हैं। कुछ नास्तिकों ने "गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत" के सिद्धांत पर भरोसा करते हुए उसे ब्रह्मांड के उद्भव के लिए पर्याप्त माना है। अगर इस बात की अनदेखी कर भी दी जाए कि केवल इस बात पर विचार करने मात्र से यह दावा धाराशायी हो जाता है कि गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का स्रोत क्या है, यह सिद्धांत बनाया किसने है या किसने इसे संहिताबद्ध किया तथा हस्तक्षेप करने या प्रभाव दिखाने का गुण दिया है?

इन प्रारंभिक सुस्पष्ट तथ्यों की अनदेखी कर भी दी जाए, तब भी "गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत" बिलियर्ड्स के बॉल को धकेल नहीं सकता है।

केवल सिद्धांत चीजों की उपस्थिति के बिना कुछ भी करने में असमर्थ है।

गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत कभी बिलियर्ड्स के बॉल को पैदा नहीं कर सकता है, वह उसे उसी समय हरकत दे सकता है, जब बॉल मौजूद हो और उसे बिलियर्ड्स की छड़ी से मधक्का दिया जाए।

गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत कोई मुस्तक़िल चीज़ नहीं है। यह केवल किसी प्राकृतिक घटना का वर्णन है।

गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत बिलियर्ड्स के बॉल को, उसकी छड़ी के द्वारा जोर से धक्का दिए बिना हिला नहीं सकता। जब आप बिलियर्ड्स गेंद को हरकत देते हैं तभी गुरुत्वाकर्षण का कानून प्रकट होता है।

लेकिन नास्तिकों का दावा है कि आकर्षण के नियम का पाया जाना ही बिलियर्ड्स की गेंद, बिलियर्ड्स की छड़ी और गेंद को हरकत देने के लिए पर्याप्त है!

ब्रह्मांड के प्रकट होने के संबंध में कौन-सी बात तर्क एवं विवेक से अधिक निकट है? सृष्टिकर्ता या सिद्धांत?

इसी तरह, मोटर कार में आंतरिक दहन के सिद्धांत मोटर कार बना नहीं सकते।

यदि हम आंतरिक दहन के नियमों को मोटर से जोड़ दें, तो मोटर भी

काम नहीं करेगी। इसके लिए ज़रूरी है कि इंजन मौजूद हो जो शक्ति उपलब्ध करता है, दहन की चिंगारी हो और सबसे पहले मोटर हो। इन सब चीज़ों के बाद दहन के सिद्धांत प्रकट होते हैं और मोटर काम करती है।

यह मान लेना तर्क से परे है कि आंतरिक दहन मोटर, दहन की चिंगारी, इंजन, ड्राइवर एवं रास्ता बनाने के लिए पर्याप्त है।

ब्रह्मांड के प्रकट होने के लिए सिद्धांतों ही को ही पर्याप्त मान लेने का विचार, एक ऐसा विचार है, जो दिमाग से बिल्कुल परे है।

इसके अलावा, यदि हम इस विचार को मान लें, तो यह हमें कर्ताओं के एक तसलसुल की ओर ले जाएगा, जिसे हमने पिछले प्रश्न के उत्तर में समझाया था। यानी इस सिद्धांत को किसने बनाया और किसने इसे अस्तित्व प्रदान किया? यदि वह कहे कि इसे एक दूसरे नियम ने बनाया है, तो कर्ताओं के तसलसुल में प्रवेश कर जाएँगे, जो किसी भी प्राणी या क़ानून के प्रकट होने को निरस्त करता है।

11- ब्रह्मांड के अचानक प्रकट होने को मानने में क्या बुराई है?

उत्तर : अचानक प्रकट होने (महाविस्फोट) की बात करना संभावनाओं के नियमों से अज्ञानता है, क्योंकि इसके लिए दो ज़रूरी शर्तें हैं।

दोनों हैं : समय एवं स्थान।

महाविस्फोट के लिए समय की शर्त है, जब यह महाविस्फोट हो।

इसी प्रकार उसके लिए भौतिक उपस्थिति आवश्यक है, जिसमें वह

अपना प्रभाव डाले।

इस प्रकार हम कैसे यह मान सकते हैं कि इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति अचानक से हो गई है, जबकि यह ब्रह्मांड ना-मालूम समय व स्थान से क़ायम है।

इसी तरह महाविस्फोट का प्रभाव कैसे ज़ाहिर हो सकता है, खुद उसके ज़ाहिर हुए बगैर?

यह महाविस्फोट अपने तथा समय व स्थान के वजूद से पहले अपना असर कैसे दिखा सकता है, जबकि समय व स्थान उसके लिए बुनियादी शर्त हैं?

12- हम नास्तिक का खंडन कैसे कर सकते हैं, जो कहता है कि यह ब्रह्मांड सदैव से है?

ज : ऊष्मप्रवैगिकी के दूसरे नियम Second Law of Thermodynamic के अनुसार ब्रह्मांड का सदैव से होना असंभव है।

इस नियम को सरल बनाने के लिए तथा इसे समझाने के लिए हम यह उदाहरण दे सकते हैं : अगर आपके कमरे में एक कप गर्म पानी है। उस गर्म पानी से गर्मी कमरे के वातावरण में तब तक स्थानांतरित होती रहेगी, जब तक कि कमरे का तापमान कप के तापमान के बराबर न हो जाए। यह ऊष्मप्रवैगिकी का दूसरा नियम है, जहाँ ऊर्जा हर समय ऊपर से नीचे की ओर प्रवाहित होती रहती है।

यह नियम ब्रह्मांड की हर चीज में ब्रह्मांड के उद्भव के बाद से हर पल

लागू है, जब तक ब्रह्मांड में हर चीज का तापमान बराबर न हो जाए। जब ब्रह्मांड में सब कुछ तापमान में बराबर हो जाएगा, तो उस समय वह घटित होगा, जिसे ब्रह्मांड की गर्मी से मृत्यु Thermal Death of Universe के रूप में जाना जाता है। यदि ब्रह्मांड शाश्वत होता, तो वह अब तक रुक गया होता (थर्मल रूप से मृत)। लेकिन वास्तव में ब्रह्मांड अब तक अधिकतम एन्ट्रापी (Maximum entropy) से कम की स्थिति में है। वह अभी तक थर्मल डेथ तक नहीं पहुंचा है। इसलिए, यह शाश्वत नहीं है, बल्कि इसकी एक निश्चित शुरुआत है, जिसके साथ समय और स्थान प्रकट हुआ।

इसी नियम के अनुसार यह सिद्ध हो चुका है कि ब्रह्मांड की शुरुआत न्यूनतम एन्ट्रापी से हुई है। इसका मतलब है कि इसकी उत्पत्ति पिछले उदाहरण से अलग हुई है।

एक तरफ यह वैज्ञानिक नियम है, तो बिल्कुल दूसरी तरफ नास्तिकता।

13- कार्य-कारण का नियम सृष्टिकर्ता पर क्यों लागू नहीं होता? दूसरे शब्दों में सृष्टिकर्ता को किसने बनाया?

उत्तर : पहला उत्तर : सृष्टिकर्ता पर अपने प्राणियों के नियम लागू नहीं होते हैं, यह स्पष्ट है।

नहीं तो हम कहेंगे : रसोइया को किसने पकाया?

पेंटर को किसने पेंट किया?

यह स्वतः स्पष्ट है कि स्रष्टा ने ही समय और स्थान को पैदा किया है,

और उस पर वे क़ानून लागू नहीं होते हैं जिन्हें उसने स्वयं बनाया है, वह पाक व पवित्र है!

दूसरा उत्तर : हर वह चीज़ जो पैदा हुई है, उसका कोई न कोई पैदा करने वाला है। यह सही है, परन्तु स्रष्टा का मामला यह है कि "उस जैसा कुछ भी नहीं है।" [सूरा अल-शूरा : 11]

तीसरा उत्तर : सृष्टिकर्ता पैदा नहीं हुआ है। वह हमेशा से है। हम उसके बारे में कैसे कह सकते हैं कि उसको किसने पैदा किया है?

चौथा: आवश्यक है कि हमेशा से वजूद रखने वाला एक सृष्टिकर्ता हो, वरना हम निर्माताओं की न रुकने वाली श्रंखला के चक्कर में फंस जाएंगे, जो अनिवार्य रूप से क्रियाओं के न होने की ओर ले जाता है, जिसे हमने कुछ देर पहले विस्तार से समझाया है। इस लिए ज़रूरी है कि एक हमेशा से वजूद रखने वाला सृष्टिकर्ता हो।

14- ब्रह्मांड बहुत बड़ा है। हम इस विशाल ब्रह्मांड में इतने छोटे आकार के साथ केंद्र कैसे हो सकते हैं?

उत्तर : नास्तिक एक ढीली धारणा बनाता है और कहता है : चूंकि ब्रह्मांड विशाल है, तो मनुष्य इस ब्रह्मांड में केंद्र नहीं है!

यह धारणा एक पृष्ठभूमि पर आधारित है : चूंकि खेत बहुत बड़े हैं और उनका मालिक उनकी तुलना में बहुत छोटा है, तो वह उनका मालिक नहीं है!

मामला साइज पर बिल्कुल भी तय नहीं होता है,

जैसा कि चरित्र, इसका कोई भौतिक आकार नहीं होता है, परन्तु यह महान एवं नीच लोगों के बीच अंतर करने की सबसे बड़ी कसौटी है।

मनुष्य अपने चरित्र से ही तोले जाते हैं।

इसलिए आकार कोई कसौटी नहीं है।

आइए उदाहरण से इस बात को समझें: यदि हमारा कोई राजा हो, और इस राजा ने अपने बेटे को कुछ सलाह दी हो एवं नसीहत की हो, फिर उसके लिए कोई वसीयत लिख दे। क्या कोई आपत्तिकर्ता आकर कह सकता है कि लाखों एकड़ और अनगिनत विशाल भूमि का मालिक राजा अपने बेटे के ही बारे में कैसे सोच सकता है? जिसका आकार और वजन इस राजा के पास जमीन का दस लाखवां हिस्सा भी नहीं है?

अल्लाह ही के लिए उच्च उदाहरण है।

क्या यह किसी तरह भी उचित आपत्ति है?

मामला आकार या वज़न का नहीं है।

फिर क्या यह ब्रह्मांड अरबों बार पिन की नोक से छोटे बिंदु से शुरू नहीं होता है, जैसा कि दुनिया के सभी भौतिक विज्ञानी तय करते हैं?

इस प्रकार आकार सापेक्ष है।

अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है, जैसे चाहता है पैदा करता है, इससे नास्तिकों को क्या समस्या है।

क्या अल्लाह के पास संसाधनों की कमी है कि वह आवश्यकता

अनुसार ही खर्च करेगा?

अल्लाह इन तमाम चीज़ों से उपर है।

लेकिन क्या हम वाकई ब्रह्मांड के केंद्र में हैं?

हाँ, हे मनुष्य, आप अल्लाह की दी हुई ज़िम्मेदारी के अनुसार इस ब्रह्मांड का केंद्र हैं।

अल्लाह की दी हुई ज़िम्मेदारी का अर्थ है; धर्म।

धर्म वह अमानत है जिसकी ज़िम्मेदारी आप पर है। यह वह सबसे बड़ी परीक्षा है जिसके पास करने की आपसे मांग की जाती है।

आप, हे मनुष्य, आपसे सर्वशक्तिमान अल्लाह की पूजा करने की मांग की जाती है, और इस प्रकार आप इस ब्रह्मांड का केंद्र होंगे, आप इस ब्रह्मांड का केंद्र अपने आकार, शक्ति या क्षमताओं से नहीं, बल्कि अल्लाह की दी हुई ज़िम्मेदारी की वजह से हैं।

आप भला करने और बुराई को छोड़ने, तथा ईमान लाने या कुफ़्र के रास्ता चलने की क्षमता रखते हैं।

हम सभी जानते हैं कि हम पर अल्लाह का आदेश पालन करना अनिवार्य है। चाहे हम इसे पसंद करें या नहीं!

मोमिन, नास्तिक और अज्ञेयवादी, हर कोई जानता है कि वह शरीयत को मानने का पाबंद है और वह ईश्वरी की दी हुई ज़िम्मेदारी को महसूस भी करता है। वह एक नैतिक विवेक के दंश से पीड़ित है। वह

जानता है कि उसके अंदर करूँ या न करूँ की असमंजस की स्थिति है, - अच्छा करूँ और बुराई को छोड़ दूँ-, हममें से हर कोई अपने अंतरआत्मा से जानता है कि वह पाबंद है।

हम लोग इस ज़िम्मेदारी के हिसाब से इस ब्रह्मांड के केंद्र में हैं।

इसी प्रकार हम लोग चीज़ों को जानने एवं पहचानने के हिसाब से इस ब्रह्मांड के केंद्र में हैं। हम हमारे अस्तित्व की वास्तविकता और हमारे चारों ओर ब्रह्मांड की वास्तविकता को जानते हैं, पहचानते हैं एवं उसका ज्ञान रखते हैं और हम अपने अस्तित्व के अर्थ को अच्छी तरह समझते हैं।

हम पाबंद हैं, ज़िम्मेदार हैं, जवाबदेह हैं एवं हमारा हिसाब-किताब होगा।

हम ही हैं जो इस ब्रह्मांड की बनावट की सुंदरता से अच्छी तरह अवगत हैं, हम इसकी उत्तम बनावट को जानते हैं, हमें जो ज़िम्मेदारी दी गई है उसे लागू करने या उसका इनकार कर देने की हम क्षमता रखते हैं, हम अपना रास्ता चुनने की पूरी शक्ति रखते हैं, हम ईमान या कुफ़्र में से जिसको चाहे, चुन सकते हैं।

हम लोग इस ब्रह्मांड के केंद्र में हैं। "हमने अमानत [को आकाशों और धरती तथा पर्वतों के समक्ष प्रस्तुत किया, लेकिन उन सबने उसका भार उठाने से इनकार कर दिया और वे उससे डर गए। परंतु इनसान ने उसे उठा लिया। निःसंदेह वह बड़ा ही अत्याचारी औ बहुत अज्ञानी है।" [सूरा अल-अहज़ाब : 72]

15- कुछ नास्तिक कहते हैं : कई ग्रह मौजूद हैं और इसलिए, संभावनाओं के सिद्धांत के अनुसार, जीवन के लिए उपयुक्त कोई दूसरा ग्रह होना स्वाभाविक है। क्या यह तर्क सही है?

उत्तर : प्रवीणता के साक्ष्य की आलोचना के साथ कई ग्रहों के अस्तित्व का क्या संबंध है?

यह मुद्दा कच्चा माल नहीं है।

मिसाल के तौर पर मैं हर प्रकार की सब्जियों, फलों और जानवरों से भरे एक जंगल में हूं, इसका मतलब यह नहीं है कि अचानक जंगल के बीच में पके हुए स्वादिष्ट भोजन का एक बर्तन मेरे सामने आ जाए।

इसी तरह दुनिया के रेगिस्तानों में रेत की बहुतायत है, इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे रेगिस्तान में मेरे चारों ओर डिजिटल प्रोसेसर और इलेक्ट्रॉनिक चिप्स मिल जाएँ, जो रेत से बने होते हैं!

मामला कच्चा माल नहीं है, बल्कि मामला बनाने एवं सटीक बनाने का है।

केवल ग्रहों के एक समूह की उपस्थिति इस बात के लिए पर्याप्त नहीं है कि उनके बीच में पृथ्वी जैसा एक संपूर्ण रूप से बनाया हुआ ग्रह दिखाई दे जाए।

मुद्दा पूरी महारत के साथ बनाने का है। "यह अल्लाह की रचना है, जिसने प्रत्येक चीज़ को सुदृढ़ किया है।" [सूरा अल-नम्ल : 88]

चुनांचे बहुत सारे अन्य ग्रहों की उपस्थिति पृथ्वी पर जीवन के

अस्तित्व को सही नहीं ठहराती है।

अन्य ग्रहों का अस्तित्व आपके अंदर चार अरब अक्षरों के आनुवंशिक कोड को सही नहीं ठहराता है, जो आपके अस्तित्व से पहले आपके सभी कार्यों, अंगों और हार्मोन को प्रभावशाली नियंत्रण से नियंत्रित करता है!

जीवन मालूम चीज़ है, कोई कच्चा माल नहीं है।

अगर एक नास्तिक और मैं एक ग्रह पर गए और एक जटिल उपकरण की खोज की, जो प्रभावशाली एवं सटीकता के साथ काम करता हो और भले ही हम उस समय तक उस उपकरण के कार्य को समझते न हों, तो क्या उस उपकरण के निर्माता को केवल उस ग्रह के विशाल आकार के कारण नकारा जा सकता है, जिसमें हम हैं?

जब हम इस उपकरण को देखते हैं तो बौद्धिक अंतर्ज्ञान मुझे और एक नास्तिक को यह कहने के लिए प्रेरित करता है कि इसका कोई न कोई सक्षम बनाने वाला होगा।

जो नास्तिक इस तर्कसंगत अंतर्ज्ञान को नकारता है, उसी से दलील मांगी जाएगी, न कि उससे जो इसे साबित करता हो।

इस सुंदर, चमकदार ब्रह्मांड के रचयिता को नकारने वाला सबूत पेश करेगा न कि उसपर ईमान रखने वाला।

एक बार संशयवादी नास्तिक कार्ल सागन ने "संपर्क" नामक एक उपन्यास लिखा, जिसमें उसने बताया कि वैज्ञानिक कैसे अलौकिक बुद्धि

की तलाश में हैं।

इस काल्पनिक उपन्यास में, वैज्ञानिकों ने बाहरी अंतरिक्ष से आने वाली अभाज्य संख्याओं की एक लंबी श्रृंखला की खोज की। चूँकि यह प्रारंभिक अनुक्रम एक विशिष्ट गणितीय मूल्य प्रदान करता है, एक ऐसा मूल्य जो एक प्रकार के नियंत्रण को इंगित करता हो, इसलिए इस तरह का निष्कर्ष निकालने का पर्याप्त बौद्धिक प्रमाण था कि यह संदेश किसी अन्य सभ्यता से आ रहा है, जो हमारे साथ संवाद करने की कोशिश कर रहा है।

मजाक यह है कि कार्ल सागन एक प्रसिद्ध अज्ञेयवादी हैं, लेकिन उनका दिमाग इस बात को स्वीकार करता है कि एक छोटे-से अक्षर की जटिलता और व्यवस्था सृजन और महारत का प्रमाण है!

केवल अभाज्य संख्याओं की एक श्रृंखला एक विशाल सभ्यता के अस्तित्व को सुनिश्चित करेगी, तो आप अपने शरीर की प्रत्येक कोशिका के भीतर चार अरब अक्षरों का क्या करेंगे, जिनका हाल यह है कि यदि उनमें से एक अक्षर में कोई गड़बड़ी होती है, तो एक आपदा सी आ जाती है? आप इस महारत का श्रेय तर्कहीन, नास्तिक विचित्रताओं को कैसे देते हैं।

सृष्टिकर्ता के होने के स्पष्ट तर्क के खिलाफ़ इन तर्कहीन, नास्तिक विचित्रताओं को मानना बुद्धिमान का काम नहीं है। "(ऐ नबी!) उनसे कह दें : तुम देखो आकाशों और धरती में क्या कुछ है? तथा निशानियाँ और चेतावनियाँ उन लोगों के लिए किसी काम की नहीं हैं जो ईमान नहीं लाते।" [सूरा यूनुस : 101]

16- एक से अधिक सृष्टिकर्ता क्यों नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : "अगर इन दोनों (ज़मीन व आसमान) में अल्लाह के अलावा कई पूज्य होते, तो दोनों नष्ट हो जाते।" [सूरा अल-अंबिया : 25]

अल्लाह के साथ एक और अल्लाह का अस्तित्व, बहुलता को अनिवार्य करता है और बहुलता अभाव को साबित करती है।

एक अभाव एवं कमज़ोर सृष्टिकर्ता -अल्लाह उससे पाक व पवित्र है- से ब्रह्मांड का अशांत होना लाज़िम आता है। ऐसा भी हो सकता है वह ध्वस्त हो जाए एवं ब्रह्मांड में गड़बड़ी पैदा हो जाए।

एक कमज़ोर पूज्य के साथ ब्रह्मांड के बाक़ी रहने की गारंटी नहीं दी जा सकती है।

"यदि उन दोनों (ज़मीन व आसमान) में अल्लाह के सिवा अन्य पूज्य होते, तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः पवित्र है अल्लाह, अर्श (सिंहासन) का स्वामी, उन बातों से, जो वे बता रहे हैं।" [सूरतुल-अंबिया : 22]

अल्लाह ने अपने आपको किसी ज़रूरत या अभाव से पवित्र बताया है। वह निस्पृह एवं सर्वशक्तिमान है।

इन बात के साथ-साथ यदि दो या दो से अधिक पूज्य होते तो मतभेद होने की संभावना समझौते की तुलना में तर्क के अधिक करीब है, क्योंकि

एक से ज़्यादा पूज्य का मतलब एक से ज़्यादा चाहत और एक से ज़्यादा इरादा है। चाहतों की बहुलता का मतलब है कि इनमें से हर एक मोहताज है और इसका मतलब है धरती एवं आकाशों की व्यवस्था में बिगाड़।

मानव वृत्ति भी निश्चित तौर पर कहती है कि अल्लाह एक है। यदि कोई भौतिक या गैर-भौतिक विज्ञानिक इस ब्रह्मांड को देखे, तो वह एक निर्माता के अलावा की कल्पना नहीं करेगा। यही प्रवृत्ति है।

17- धर्म की क्या आवश्यकता है?

उत्तर : क्या ऐसा नहीं है कि एक कट्टर नास्तिक भी मानता है कि ईमानदारी झूठ बोलने से बेहतर है?

क्या ऐसा नहीं है कि एक कट्टर नास्तिक भी मानता है कि अमानतदारी विश्वासघात से बेहतर है?

इन परिभाषाओं का संबंध इस भौतिक संसार से नहीं है और न इस भौतिक संसार में कोई ऐसी चीज़ है, जो इनके अर्थ एवं इनकी आवश्यकता को उचित ठहराए।

सच का क्या अर्थ है?

अमानत का क्या मतलब है?

यदि हम परमाणु की गहराई का भी विश्लेषण करें, तो क्या हम सच या झूठ जैसे शब्दों के अर्थों का पता लगा पाएंगे?

अगर हम आकाशगंगाओं की भौतिकी या हार्मोन के रसायन विज्ञान

का निरीक्षण करें, तो क्या हम जान पाएंगे कि ईमानदारी या विश्वासघात क्या है?

इन परिभाषाओं का संबंध इस भौतिक संसार से है ही नहीं।

परन्तु यह सच्ची पारिभाषाएं हैं।

बल्कि, यह सबसे बड़ी चीजों में से है।

किसी व्यक्ति का मूल्य उसकी नैतिकता पर आधारित होता है, न कि उसके भौतिक आकार, उसके परमाणुओं की संख्या या उसकी कोशिकाओं के ऊर्जा स्तर पर।

मनुष्य का मूल्य अल्लाह के आदेशों के प्रति अंदर से उसकी प्रतिबद्धता से है।

यह वह मूल्य है, जिसमें भौतिक संसार एवं मनुष्य के बीच कोई संबंध नहीं है।

एक अच्छा आदमी होता है और एक बुरा आदमी,

लेकिन कोई अच्छा पहाड़ और कोई बुरा पहाड़ नहीं होता है

और न हम एक ईमानदार ग्रह और एक गद्दार ग्रह देखते हैं।

केवल मनुष्य का संबंध मूल्य से है, उद्देश्य से है और अस्तित्व से है।

इंसान और जिन्न ही केवल यह समझते हैं कि वे अल्लाह की ओर से दी गई ज़िम्मेदारी के के पाबंद हैं।

नैतिकता का अर्थ महसूस करना हममें से प्रत्येक के अंदर अल्लाह की ओर से दी गई ज़िम्मेदारी की वृत्ति का केवल एक हिस्सा है।

धर्म इंसान की समझ के लिए जरूरी है।

एकमात्र धर्म ही नैतिकता के अर्थ की व्याख्या करता है और यह बताता है यह क्यों मौजूद है और हमें इसका पालन करने की आवश्यकता क्यों महसूस होती है?

केवल धर्म ही नैतिकता को उसके सही रंग में पेश करता है।

नैतिकता को केवल अल्लाह की ओर से दी गई ज़िम्मेदारी के दायरे में ही समझा जा सकता है।

धर्म के द्वारा ही यह जाना जा सकता है कि यह मानव जाति की वृत्ति क्यों है।

धर्म के माध्यम से हम अस्तित्व के उद्देश्य को जानते हैं और यह जानते हैं कि जिन नैतिकताओं का हम पालन करना आवश्यक समझते हैं, यदि हम उनका पालन नहीं भी करते हैं, तो भी यह अल्लाह की ओर से दी गई ज़िम्मेदारी का हिस्सा है।

इसलिए धर्म मानवता की ज़रूरत है।

इसके अलावा हम धर्म के माध्यम से ही जानते हैं कि हम यहां क्यों हैं?

मृत्यु के बाद क्या होगा?

हमारे अस्तित्व का अर्थ क्या है

और इस अस्तित्व में हमसे क्या मांग की गई है?

सबसे महत्वपूर्ण मानवीय कर्तव्यों को जानने के लिए धर्म अनिवार्य है।

इसलिए धर्म के बिना सारा संसार पूर्ण अंधकार और पूर्ण शून्यवाद में बदल जाएगा।

इब्न अल-क़य्यिम -उनपर अल्लाह की रहमत हो- कहते हैं : "सुख और सफलता का कोई मार्ग नहीं है, न तो इस दुनिया में और न ही परलोक में, सिवाय रसूलों के बताए हुए मार्ग के। अच्छे-बुरे को विस्तार से जानने का उनकी शिक्षाओं के अलावा कोई माध्यम नहीं है एवं उनके पथ पर चले बिना अल्लाह की स्वीकृति कभी नहीं मिल सकती है।"[1]

दुनिया पूरी तरह अंधकारमय है, जब तक कि उसमें धर्म एवं रिसालत का सूर्योदय न हो, जैसा कि शैखुल इस्लाम इब्न-ए-तैमिया -उनपर अल्लाह की रहमत हो- ने कहा है।[2]

धर्म के बिना अस्तित्व का उद्देश्य, अच्छाई का अर्थ या मूल्य ज्ञात नहीं हो सकता है।

रसूलों की शिक्षाओं के बिना दुनिया एक भयावह बेतुकेपन में बदल जाएगी।

---

[1] ज़ादु अल-मआद : 1/68

[2] मजमू अल-फ़तावा : 19/93,94

जब धर्म गायब हो जाएगा और लोग रसूलों का इंकार करने लगेंगे, तो मनुष्य एक कचरे का ढ़ेर बन जाएंगा, जैसा कि कार्ल सागन ने कहा है और कीटाणु की तरह हो जाएंगा, जैसा कि सार्त्र ने कहा है।[1]

वास्तव में, मनुष्य रासायनिक भूसा बन जाएगा, या अधिक सटीक अर्थ में, रासायनिक गंदगी, जैसा कि स्टीफन हॉकिंग कहते हैं।[2]

नबूवत अस्तित्व की एकमात्र नब्ज है और नबूवत के बिना, सबसे अद्भुत आविष्कार और सबसे सुखद इच्छाएं आतंक में बदल जाएंगी।

इसी तरह धर्म के बिना, दुनिया अपनी सारी सुंदरता के बावजूद भयानक भूतों में बदल जाएगी।

यदि आप किसी नास्तिक से अस्तित्व संबंधी कोई प्रश्न पूछेंगे, जैसे हम इस दुनिया में क्यों हैं या मृत्यु के बाद क्या होगा?

तो वह या तो आपके प्रश्न से लड़खड़ा जाएगा या पूरी तरह चुप हो जाएगा।

---

[1] वीडियो स्रोत: ब्रह्मांडीय महासागर के किनारे (The Shores of the Cosmic Ocean) [एपिसोड 1], हमारे अस्तित्व का कुछ हिस्सा जानता है कि हम यहीं से आए हैं। हम वापसी के लिए तरस रहे हैं। और हम कर सकते हैं, क्योंकि ब्रह्मांड हमारे भीतर भी है, हम स्टार-सामान से बने हैं। हम ब्रह्मांड के लिए खुद को जानने का एक ज़रिया है। जहां तक इंसान के कीड़े मकूड़े की तरह होने की बात है, तो इसको सार्त्र ने अपने उपन्यास मतली में इसका उल्लेख किया है।

[2] केन कैंपबेल के साथ रियलिटी ऑन द रॉक्स: बियॉन्ड अवर केन, 1995 के साथ एक साक्षात्कार से।

अतः मनुष्य तथा नैतिक मूल्यों की ज़रूरतों को समझने के लिए धर्म एक स्वाभाविक आवश्यकता है। अस्तित्व का अर्थ, अस्तित्व का उद्देश्य और अल्लाह की बंदगी की प्राप्ति, वह बंदगी, जिसके माध्यम से मुक्ति प्राप्त होगी है, को जानने के लिए धर्म अनिवार्य है।

18- इस नैतिकता को मस्तिष्क या समाज की उपज मानने में क्या रुकावट है?

उत्तर : मस्तिष्क ठीक उन्हीं भौतिक घटकों से बना है, जो भौतिक संसार में हैं।

कोई फर्क नहीं पड़ता है कि मस्तिष्क कितना जटिल है या भौतिक संरचनाएं कितना जटिल हैं। शून्यों का योग केवल शून्य होगा।

जब पदार्थ अच्छा या बुरा नहीं जानता, तो उसी प्रकार दिमाग भी नहीं जानेगा।

यहाँ हम नास्तिक से पूछते हैं कि अच्छाई और बुराई की अवधारणा कैसे प्रकट हुई, जब संपूर्ण भौतिक संसार नैतिक रूप से तटस्थ है, न तो अच्छाई को जानती है और न बुराई को?

दूसरा प्रश्न : कौन-सी चीज़ मस्तिष्क को पृथ्वी के सभी लोगों का सफाया करने से रोकती है?

कौन-सी चीज़ मस्तिष्क को निम्न मानव जातियों को जानवरों के पिंजरों में भरने से रोकती है?

इसी प्रकार कौन-सी चीज़ मस्तिष्क को बीमारों, विकलांगों, कमज़ोरों

और निम्न जातियों को नष्ट करने से रोकती है, जैसा कि नाजी द्वारा प्राकृतिक चयन परियोजना -एक्शन टी 4 प्रोजेक्ट- में हुआ था?[1]

भौतिक मस्तिष्क के पास इन सवालों का कोई जवाब नहीं है। न तो वह इन बातों को सही कह सकता है और न ग़लत।

मस्तिष्क नैतिक पक्ष से पूरी तरह तटस्थ है। क्योंकि यह धरती के परमाणुओं से ही बना है।

मस्तिष्क और नैतिकता के बीच कोई संबंध नहीं है। न निकट का और न ही दूर का।

जहाँ तक इस विचार की बात है कि समाज नैतिकता का स्रोत है, तो यह एक अजीब विचार है, क्योंकि नैतिकता का अर्थ मनुष्य के रूप में मनुष्य है, न कि समाज के रूप में समाज।

फिर समाज उन्हीं भौतिक घटकों से बना है और शून्यों का योग फिर से केवल शून्य ही होगा। समाज ने नैतिकता का निर्माण कैसे किया, जबकि वह भौतिक दुनिया से कोई संबंध नहीं रखती?

फिर यदि यह कथन सही हो और हम नैतिकता को समाज की उपज मान लें, तो यहाँ नाज़ी द्वारा दूसरों का विनाश किया जाना सही होगा, क्योंकि समाज की यही राय थी।

जब दुनिया ने नाजी पर मुकदमा चलाने का फैसला किया, तो यह निर्णय इस तथ्य पर आधारित था कि नैतिकता स्वतंत्र है और समाज की

[1] https://en.wikipedia.org/wiki/Aktion_T4

उपज नहीं है। अन्यथा, वे नाज़ी पर मुकदमा चला नहीं सकते थे और उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि उन्होंने शुरू में ग़लती की है।

नैतिकता समाज से स्वतंत्र हैं। सही सही है अच्छे समाज के निकट भी और बुरे समाज के यहाँ भी।

ग़लती ग़लती है अच्छे समाज के निकट भी और बुरे समाज के यहाँ भी।

नैतिकता का एक अर्थ है, जो दिमाग और समाज से परे है।

19- पृथ्वी की सभ्यताओं में एक से अधिक पूज्य हैं, तो फिर अल्लाह ही पर ईमान क्यों?

उत्तर : पृथ्वी के सभी धर्मों में अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है।

बाकी धर्मों के साथ हमारी असहमति यह है कि उन्होंने अल्लाह के साथ छोटे देवताओं, जैसे ईसाई धर्म में यीशु और पवित्र आत्मा, हिंदू धर्म में विष्णु, शिव और ब्रह्मा आदि को अपना लिया है। यही हाल दूसरे धर्मों का भी है।

सभी धर्म एक ही अल्लाह में विश्वास रखते हैं और उनकी दृष्टि में वही अस्तित्व का रचयिता है।

लेकिन वे अल्लाह के साथ अन्य देवताओं को पूजते हैं।

यहाँ तक कि बहुदेववादी लोग भी अपनी मूर्तियों को यह नहीं मानते कि वह अपने आप में पूज्य हैं, बल्कि वह मानते हैं कि अल्लाह ही

सृष्टिकर्ता है। अल्बत्ता वे उन मूर्तियों को मध्यस्थ बनाते हैं। "और अगर आप उन से प्रश्न करें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया, और सूर्य व चांद को किसने आदेश-अधीन किया? तो वे यही उत्तर देंगे कि अल्लाह! तो फिर ये कहाँ बहके जा रहे हैं।" [सूरा अल-अनकबूत : 61]

शैखुल इस्लाम इब्न-ए-तैमिया -अल्लाह उनपर रहम करे- कहते हैं : "जो लोग मूर्तियों के पूजने वालों के संबंध में यह सोच रखते हैं कि वे उनके बारे में विश्वास रखते हैं कि उनकी इन मूर्तियों ने संसार को पैदा किया है, वे बारिश बरसाती हैं, पौधे उगाती हैं, जानवरों तथा दूसरी चीज़ो को पैदा करती हैं, तो उन्हें उनके बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं है। मुर्तियों को पूजने वाले अपनी मूर्तियों से वही मतलब रखते हैं, जो क़ब्र परस्त क़ब्र वालों से रखते हैं।"[1]

विल डुराण्ट कहते हैं कि मूर्तिपूजक हिंदू धर्म की जड़ अंततः एकमात्र अल्लाह में विश्वास से जाकर जुड़ती है। वह हिंदू के देवताओं के बारे कहते हैं : "ये हजारों देवता वैसे ही हैं, जैसे ईसाई चर्च हजारों संतों को पवित्र मानते हैं। एक क्षण के लिए भी किसी भारतीय के मन में यह नहीं आता है कि इन देवताओं, जिनकी संख्या अनंत है, के पास सर्वोच्च संप्रभुता है।"[2]

भारत पर ब्रिटिश कब्जे के दौरान भारत में ब्रिटिश सरकार को सौंपी गई रिपोर्ट में कहा गया है कि : "समिति द्वारा शोध में सामान्य निष्कर्ष यह

[1] मजमू अल-फ़तावा : 1/359

[2] सभ्यता की कहीनी, (قصة الحضارة), विल डुराण्ट, 3/209।

है कि भारतियों का भारी बहुमत एक सर्वोच्च ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखता है।"

पृथ्वी के सभी धर्मों में अल्लाह एक ही है। "हमारा और तुम्हारा पूज्य एक ही है।" [सूरा अल-अनकबूत : 61] इन्सान की बनाई हुई मूर्तियाँ और देवता और कुछ नहीं, बल्कि अल्लाह तक पहुंचने के लिए अविश्वासी माध्यम हैं। "जिन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य लोगों को मित्र बना रखा है, वह कहते हैं कि हम तो उन्हें केवल इसी लिए पूजते हैं कि वे हमको अल्लाह के निकट कर दें।" [सूरा अल-ज़ुमर : 3]

20- यदि कोई व्यक्ति कुछ ऐसा करता है, जिसकी उसे आवश्यकता नहीं है, तो वह व्यर्थ कहलाता है! अल्लाह को हमारी जरूरत नहीं है, तो उसने हमें क्यों बनाया?

उत्तर : आवश्यकता को व्यर्थ के विपरीत मानने का विचार हास्यास्पद है।

आवश्यकता का विपरीत हिकमत है, व्यर्थ नहीं।

एक मशहूर और अमीर डॉक्टर लोगों का, उनसे बिना कुछ मांगे उनकी भलाई के लिए इलाज करता है। यहां हम उसके इस काम को व्यर्थ नहीं कहते हैं।

इस काम के पीछे की हिकमत एवं महान उद्देश्य ज़रूरत/व्यर्थ के इर्द गिर्द नहीं घूमता है।

कभी-कभी कोई तैराक एक बच्चे को, उसपर दया करते हुए बचाता

है, फिर उसके घर वालों से प्रशंसा के शब्द सुनने की प्रतीक्षा किए बग़ैर, उसे छोड़ कर चला जाता है। यहां हम उसके इस काम को आवश्यकता या व्यर्थ नहीं कहते हैं, बल्कि उसको एक उदार कार्य, नेक इरादा और अच्छा शिष्टाचार कहते हैं।

आवश्यकता एवं व्यर्थ को एक साथ जोड़कर मत देखिए।[1]

सहीह मुस्लिम की एक क़ुदसी हदीस़ में अल्लाह तआला ने कहा है : "ऐ मेरे बंदो! अगर तुम्हारे पहले और बाद के लोग तथा इनसान और जिन्न तुम्हारे अंदर मौजूद सबसे आज्ञाकारी इनसान के दिल में जमा हो जाएँ, तो इससे मेरी बादशाहत में तनिक भी वृद्धि नहीं होगी। ऐ मेरे बंदो! अगर तुम्हारे पहले और बाद के लोग तथा तुम्हारे इनसान और जिन्न तुम्हारे अंदर मौजूद सबसे पापी इंसान के दिल में जमा हो जाएँ, तो भी इससे मेरी बादशाहत में कोई कमी नहीं आएगी। ऐ मेरे बंदो! अगर तुम्हारे पहले और बाद के लोग तथा इंसान और जिन्न एक ही मैदान में खड़े होकर मुझसे माँगें और मैं प्रत्येक को उसकी माँगी हुई वस्तु दे दूँ, तो इससे मेरे ख़ज़ाने में उससे अधिक कमी नहीं होगी, जितना समुद्र में सूई डालकर निकालने से होती है। ऐ मेरे बंदो! यह तुम्हारे कर्म ही हैं, जिन्हें मैं गिनकर रखता हूँ और फिर तुम्हें उनका बदला भी दूंगा। अतः, जो अच्छा पाए, वह अल्लाह की प्रशंसा करे और जो कुछ और पाए, वह केवल अपने आपको

[1] आधुनिक दर्शनशास्त्र में धर्म की आलोचना, डा० सुलतान अल-उमैरी, पीएचडी थैसिस

कोसे।"[1]

अल्लाह सारे संसारों से बेपरवाह है।

हमारी कोशिश, प्रयास एवं कार्य किसी और के लिए नहीं, बल्कि खुद के लिए है। "और जो व्यक्ति संघर्ष करता है, तो वह अपने ही लिए संघर्ष करता है। निश्चय अल्लाह सारे संसार से बड़ा बेपरवाह है।" [6] [सूरा अल-अनकबूत : 61]

हम जानते हैं कि हर सृष्टि में अल्लाह की कोई न कोई हिकमत है। भले ही हम उससे अनजान हों। रोगी का डॉक्टर की हिकमत से अज्ञानता का मतलब यह नहीं है कि डॉक्टर के फैसले बेतुके हैं।

ईश्वरी हिकमत को जानने के लिए उस हिकमत के सभी आयामों को समझने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उसके कुछ हिस्से को समझ लेना पर्याप्त है।

हमारे लिए यह जानना काफी है कि हम अल्लाह की इबादत करने के लिए बाध्य हैं और इसमें ईश्वरी हिकमत है। कुल मिलाकर हमारे लिए इतनी ही पर्याप्त है। नहीं तो हम उसके समान हो जायेंगे, जो हर उस चीज़ के प्रति अविश्वास व्यक्त करता है, जिसे वह समझ नहीं पाता। "बल्कि उन्होंने ऐसी हक़ीक़त को झुठला दिया है जिसका उन्हें पूरा ज्ञान ही नहीं है और अभी तक उसके सामने उसकी व्याख्या खुलकर नहीं आई है।" [सूरा यूनुस : 39]

[1] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 2577।

अल्लाह बड़ी हिकमत वाला है। उसने हमें किसी न किसी उद्देश्य के तहत पैदा किया है।

केवल अल्लाह ही इबादत का हक़दार है।

अल्लाह ही इबादत के योग्य है। वही सृष्टिकर्ता है, जिसने हमें शून्य से पैदा किया है। अल्लाह पाक ने कहा है : "ऐ लोगो! अपने उस रब की उपासना करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम अल्लाह से डरने वाले बन जाओ।" [सूरा अल-बक़रा : 164] वही है जिसने हमारा मार्गदर्शन किया, वही है जिसने विधान दिया, तक़दीर बनाई, आदेश दिया और मना किया। "सुन लो! सृष्टि करना और आदेश देना अल्लाह ही का काम है।" [सूरा अल-आराफ : 54]

सभी सृष्टि न केवल अल्लाह की है, बल्कि उसी का शासन है और हम उसी पाक अल्लाह की आज्ञा के अनुसार चलते हैं।

इबादत, बंदे पर अल्लाह का अधिकार है। वह अल्लाह पाक जिसने हमें पैदा किया है, हमें जीवन दिया है, हमें आजीविका देता है, हमारा मार्गदर्शन करता है एवं हमारी ओर अपने संदेशवाहकों को भेजा है, ताकि हमें आज़माए कि हममें से किसका कार्य बेहतर है। इस प्रकार इबादत अल्लाह का हमपर अधिकार है। "जिसने मृत्यु तथा जीवन को पैदा किया, ताकि तुम्हारा परीक्षण करे कि तुम में किसका कर्म अधिक अच्छा है? तथा वही प्रभुत्वशाली, अति क्षमावान् है।" [सूरा अल-मुल्क : 2] हमारा जीवन और इस जीवन के बाद का जीवन न तो इबादत के बिना सुधर सकते हैं और न ही उसके बगैर हमारी नैतिक स्थिति सही हो सकती है। इबादत

अनैतिकता और बुराइयों को रोकती है और इससे लोगों की दुनिया ठीक होती है। अल्लाह तआला ने कहा है : "तथा नमाज़ क़ायम करें। निःसंदेह नमाज़ निर्लज्जता और बुराई से रोकती है।" [सूरा अल-अनकबूत : 61]

हम उपासना के बिना जन्नत प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि यह परलोक में मुक्ति और इस संसार में खुशी का कारण है।

इबादत हमारे लिए है एवं हमारी भलाई के लिए है। वह अल्लाह के प्रति हमपर वाजिब है, क्योंकि वही हमारा सृष्टिकर्ता है। उसका लाभ एवं नुक़सान हमारी ही तरफ लौटता है।

जन्नत बहुमूल्य चीज़ है। जो उसको पाना चाहता है, उसे चाहिए कि वह इबादत करे। हमें पाक अल्लाह की ज़रूरत है। उसकी इबादत करने के हम ज़रूरतमंद हैं। वह हमसे एवं सारी सृष्टि से बेपरवाह है।

21- हम अल्लाह को कैसे पहचान सकते हैं?

उत्तर : अल्लाह की पहचान बहुत सारे रास्तों से कर सकते हैं। मगर हम यहां चार रास्तों का उल्लेख करेंगे।

पहला रास्ता : हम स्वस्थ प्रवृत्ति के माध्यम से अल्लाह को जान सकते हैं।

मनुष्य अपनी प्रवृत्ति से जान सकता है कि उसका कोई रचनाकार है। आप अपने स्वभाव के माध्यम से जान सकते हैं कि आपका एक सृष्टिकर्ता है, जिसने आपको इस रूप, इन अंगों, इस रचना और इस अद्भुत शिल्प कौशल और पूर्णता के साथ बनाया है।

साथ ही, मनुष्य अपनी प्रवृत्ति से यह भी जान सकता है कि वह इबादत के द्वारा अपने सृष्टिकर्ता की ओर लौटने पर बाध्य है तथा उसको अपने सृष्टिकर्ता की आवश्यकता है। हर क्षण उसको उसकी ज़रूरत है और विपत्ति में अल्लाह की आवश्यकता की यह भावना और बढ़ जाती है।

अल्लाह की पहचान की इस प्रवृत्ति पर हर मानव जाति की उत्पत्ती हुई है। अल्लाह तआला ने कहा है : "तो (ऐ नबी!) आप एकाग्र होकर अपने चेहरे को इस धर्म की ओर स्थापित करें। उस फ़ितरत पर जमे रहें, जिसपर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह की रचना में कोई बदलाव नहीं हो सकता। यही सीधा धर्म है, लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते।" [सूरा अल-रूम : 8] एक अन्य स्थान में उसने कहा है : "तथा (वह समय याद करें) जब आपके रब ने आदम के बेटों की पीठों से उनकी संतति को निकाला और उन्हें स्वयं उनपर गवाह बनाते हुए कहा : क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्होंने कहा : क्यों नहीं, हम (इसके) गवाह हैं। (ऐसा न हो) कि तुम क़ियामत के दिन कहो निःसंदेह हम इससे ग़ाफ़िल थे।" [सूरा अल-आराफ : 185] हमारे पैदा किए जाने से पूर्व ही अल्लाह की पहचान एवं उसकी इबादत को हमारे स्वभाव में डाल दिया गया था। "और उन्हें स्वयं उनपर साक्षी (गवाह) बनाते हुए कहा : क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सबने कहा : क्यों नहीं? हम (इसके) साक्षी हैं।" तथा अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में वर्णित एक हदीस में फ़रमाया है : "हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा किया जाता है।"[1]

[1] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 2658।

हममें से हर कोई इसी स्वभाव के साथ पैदा होता है। यह स्वभाव हर मनुष्य के लिए पर्याप्त है कि वह सत्य को तलाश करे, सत्य की ओर रहनुमाई हासिल करे एवं जब उसके सामने सत्य स्पष्ट हो जाए, तो उसके सामने आत्मसमर्पण करे।

यह वह स्वभाव एवं प्रवृत्ति है, जिसका इंकार कठोर से कठोर काफ़िर भी नहीं कर कसता, विशेषकर मुश्किल समय में। सभी लोग कठिन समय में अल्लाह की ओर लौटते हैं और अपने शिर्क को भूल जाते हैं। "जब तुम समुद्र में विपत्ति ग्रस्त होते हो, तो अल्लाह के अतिरिक्त जिन जिन को तुम पुकारते थे, सब भूल जाते हो, फिर जब वह धरती पर तुम्हें सुरक्षित ले आता है, तो तुम मुख फेर लेते हो, और मनुष्य अत्यधिक कृतघ्न है।" [सूरा अल-इसरा : 67]

जब कोई व्यक्ति बहुत संकट में होता है और बर्बादी को महसूस करता है, तो वह केवल अल्लाह से प्रार्थना करता है और अपने सभी शिर्क के कामों को भूल जाता है। विपत्ति के समय प्रार्थना में अल्लाह के प्रति ईमानदारी का कारण हर मनुष्य के अंदर मौजूद स्वस्थ प्रवृत्ति है।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति आइजनहावर, जो द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिकी सेना के कमांडर थे, यह देखने के बाद कि कैसे फ़ौजें सख़्त खतरे के समय में वृत्ति की ओर लौट आती हैं, कहते हैं : "फ़ौजी खंदक़ों में कोई नास्तिक नहीं होता।"[1]

युद्ध के समय खंदक़ (Trench) में, भगवान का इंकार करने वाला

[1] https://en.wikipedia.org/wiki/There_are_no_atheists_in_foxholes

कोई नहीं होता है। सभी अल्लाह को याद करता है। यह एक सहज तथ्य है, जिसको सभी मनुष्य विपत्ति के समय स्वीकार करते हैं।

दूसरा रास्ता : सद्बुद्धि है। सद्बुद्धि से हम अल्लाह को पहचान सकते हैं।

अल्लाह तआला ने कहा है : "क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या वे स्वयं पैदा करने वाले हैं?" [सूरा अल-तूर : 35]

अक़्ल के दृष्टिकोण से इसकी तीन संभावनाएं हैं, चौथी नहीं :

पहली : हमारी सृष्टि बिना सृष्टिकर्ता के ही हो गई है। "क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं?" यह असंभव है। हम कैसे बिना सृष्टिकर्ता के पैदा हो जाएंगे?

दूसरी : या तो हमने स्वयं अपने आप को पैदा कर लिया है। "या वे स्वयं पैदा करने वाले हैं?" यह भी नामुम्किन है। हमको पैदा किये जाने से पहले हम कैसे अपने आपको पैदा कर सकते हैं?

इस तरह अक़्ल के एतबार से तीसरा विकल्प ही बाक़ी रह जाता है, जिसके बारे में यह आयत चुप है। क्योंकि यह एक स्पष्ट बात है कि हमारा एक सृष्टिकर्ता है, जिसने हमें पैदा किया है।

इस तरह हम अक़्ल के द्वारा अल्लाह को जान सकते हैं।

तीसरा तरीक़ा : अल्लाह को जानने का तीसरा तरीक़ा अल्लाह की सृष्टियों के बारे में चिंतन है।

अल्लाह की सृष्टियों के बारे में चिंतन हमारे सामने महान अल्लाह की महानता की परतें खोलता है। "आप कह दें कि वे विवेचना करें उसके बारे में, जो कुछ आकाशों एवं धरती पर हैं।" [सूरा यूनुस : 101]

जितना अधिक हम अल्लाह की रचना की सूक्ष्मता और अद्भुत महारत के बारे में सोचते हैं, उतना ही हमें अल्लाह की पहचान होती है।

इसका उल्लेख हम पैदा करने, ध्यान रखने और महारत दिखाने के प्रमाणों के तहत पहले कर आए हैं।

चौथा रास्ता : अल्लाह को जानने का चौथा रास्ता रसूलों के द्वारा है।

यह महान अल्लाह को जानने का सबसे महत्वपूर्ण तरीक़ा है। हम रसूलों एवं नबियों के द्वारा अल्लाह की पहचान कर सकते हैं। रसूलों ने हमें अल्लाह, उसके पाक व पवित्र व्यक्तित्व एवं उसकी विशेषताओं के बारे में बताया है। नबियों के द्वारा हमने अल्लाह को उसके नामों और गुणों के साथ जाना और यह भी जाना कि हम कैसे उसकी इबादत करें, कैसे उसकी निकटता प्राप्त करें और कैसे हिसाब-किताब के दिन अल्लाह की यातना से मुक्ति पाएँ। रसूलों ने लोगों को अल्लाह की इबादत की ओर बुलाया। दूसरे शब्दों में उन्होंने लोगों को उनके स्वभाव की ओर बुलाया। उस स्वभाव की ओर, जिसपर वे पैदा किए गए हैं। वे उसी प्रकार अल्लाह की इबादत करें, जिस प्रकार उन्हें आदेश दिया गया है।

अतः रसूलों ने लोगों को सत्य और मुक्ति का मार्ग दिखाया। " शुभसूचक एवं सचेतकर्ता रसूल बनाकर भेजा, ताकि लोगों के लिए कोई बहाना एवं अभियोग रसूलों के (भेजने के) पश्चात न रह जाये, तथा

अल्लाह तआला शक्तिमान एवं पूर्ण ज्ञानी है।" [सूरा अन-निसा : 151]

इन नबियों और रसूलों का अल्लाह के बारे में बताना तथा अल्लाह का उनको चमत्कारों द्वारा समर्थन करना, यह किसी के लिए क़यामत के दिन अल्लाह के ख़िलाफ तर्क क़ायम करने का बहाना नहीं छोड़ता है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आपको वह प्रवृत्ति (फ़तरत) दी है, जिसके द्वारा आप अपने रचनाकार को जान सकते हैं। उसने आपको बुद्धि दी है, उसने आपको अपने प्राणियों पर विचार करने की शक्ति प्रदान की है और उसने आपकी ओर दूत भेजे हैं, इसलिए इसके बाद अल्लाह के ख़िलाफ़ आपके पास कोई तर्क नहीं बचता है।

22- दुनया में बहुत सारे धर्म मौजूद हैं, तो फिर इस्लाम ही क्यों?

उत्तर : इस्लाम दूसरे धर्मों के बीच केवल एक धर्म नहीं है।

इस्लामी अक़ीदा सभी पुराने युग के नबियों के अक़ीदे के मुआफ़िक़ है।

इस्लाम अपनी दिशा से भटके हुए धर्मों को सही दिशा देने के लिए आया है। वह पुराने युग के नबियों के एकेश्वरवाद के अक़ीदे को लौटाने के लिए आया है।

अल्लाह तआला का फ़रमान है : "उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया है, जिसका आदेश उसने नूह को दिया और जिसकी वह्य हमने आपकी ओर की, तथा जिसका आदेश हमने इबराहीम तथा मूसा

और ईसा को दिया, यह कि इस धर्म को क़ायम करो और उसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ। बहुदेववादियों पर वह बात भारी है जिसकी ओर आप उन्हें बुलाते हैं। अल्लाह जिसे चाहता है, अपने लिए चुन लेता है और अपनी ओर मार्ग उसी को दिखाता है, जो उसकी ओर लौटता है।" [सूरा शूरा : 11]

अतः इस्लाम दूसरे धर्मों की तरह केवल एक धर्म नहीं है, बल्कि वह तमाम धर्मों का स्रोत है।

23- इस्लाम क्या है?

इस्लाम सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रति समर्पण, अधीनता और सर झुकाने का नाम है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "तथा उस व्यक्ति से अच्छा धर्म किसका हो सकता है, जिसने अपना शीश अल्लाह के सामने झुका दिया और वह अच्छे कार्य करने वाला (भी) हो तथा इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण करे, जो बहुदेववाद से कटकर एकेश्वरवाद की ओर एकाग्र थे, और अल्लाह ने इबराहीम को अपना मित्र बनाया था।" [सूरा अन-निसा : 151]

"स्वयं को अल्लाह के लिए झुका दिया" का अर्थ है : अल्लाह के सामने आत्मसमर्पण किया, उस महान व पाक अल्लाह का अधीन हो गया, अपने रब की पवित्रता बयान की और यही सब से उत्तम तरीक़ा व दीन है।

एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "अतः तुम्हारा पूज्य एक पूज्य है, तो उसी के आज्ञाकारी हो जाओ। और (ऐ नबी!) आप विनम्रता अपनाने वालों को शुभ सूचना सुना दें।" [सूरा अल-ह़ज्ज : 34]

उक्त आयत में "उसी का आज्ञाकारी रहो" का अर्थ है : उसके आदेशों के सामने आत्मसमर्पण करो।"

इन आयतों से संकेत मिलता है कि इस्लाम का अर्थ सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रति पूर्ण समर्पण है, उसकी महानता के सामने आत्मसमर्पण है, संतुष्टि और स्वीकृति के साथ उसके विधान और उसके दृष्टिकोण का पालन करना है। यही इस्लाम का सार और वास्तविकता है।

इस्लाम, अल्लाह के लिए उसके फ़ैसले एवं विधान के सामने आत्मसमर्पण है।

इस्लाम पूरी मानव जाति के लिए अल्लाह का धर्म है। महान अल्लाह ने कहा है : "निस्संदेह अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम ही है।" [सूरा आल-ए-इमरान: 85] इस्लाम एक ऐसा धर्म है, जिसके अलावा अल्लाह दूसरे धर्मों को स्वीकार नहीं करता। "और जो इस्लाम के अलावा कोई और धर्म तलाश करे, तो वह उससे हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।" [सूरा आल-ए-इमरान : 85]

इस्लाम वह धर्म है जिसके साथ अल्लाह ने सभी नबियों और रसूलों को भेजा। सभी नबियों का धर्म एक यानी इस्लाम था। सभी पैगंबर एकेश्वरवाद के साथ आए, भले ही उनकी शरीयतें अलग-अलग हों।

अल्लाह तआला ने कहा है : "और हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजे उनकी ओर वह्य भेजी कि मेरे अलावा कोई सच्चा पूज्य नहीं है, तो तुम सब मेरी ही इबादत करो।" [सूरा अल-अंबिया : 25]

इस एकेश्वरवाद पर इस्लाम के अलावा कोई भी धर्म बाक़ी न रहा।

इस्लाम आज पृथ्वी पर एकमात्र एकेश्वरवादी धर्म है।

दूसरी शरीयतों के मानने वालों के यहाँ कुछ न कुछ शिर्क पाया जाता है। कम हो या ज़्यादा। नबियों की मौत एवं लोगों के एकेश्वरवाद की राह को छोड़ने के बाद, समय गुज़रने के साथ-साथ लोग शिर्क को अपनाने लगे, यहां तक कि आज स्थिति यह है कि इस्लाम के सिवा कोई भी धर्म शुद्ध एकेश्वरवाद के पथ पर क़ायम नहीं है।

24- क्या इस्लाम के पास उन सवालों के जवाब हैं, जिनके जवाब देने में दिमाग हैरान हैं। मसलन यह कि हम कहां से आए हैं, हम यहाँ इस दुनिया में क्यों हैं और हम कहाँ जाने वाले हैं?

इस्लाम ने इन सभी प्रश्नों का उत्तर क़ुरआन की एक ही आयत में दे दिया है। पाक अल्लाह ने कहा है : "तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी इबादत (वंदना) न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया है और तुम सब उसी की ओर लौटाए जाओगे?" [सूरा यासीन : 22]

हम कहाँ से आए? उसका उत्तर दिया गया कि अल्लाह ने हमें पैदा किया है।

हम कहाँ जाने वाले हैं? उसके जवाब में कहा गया कि अल्लाह ही

की ओर लौट कर जाना है एवं अपने कर्मों का हिसाब देना है।

हम इस दुनिया में क्यों आए हैं? तो उसको स्पष्ट किया गया कि अल्लाह की इबादत तथा परीक्षा के लिए।

हम क्यों अल्लाह की इबादत करें? तो यह स्वाभाविक है कि हम उसी की आराधना करें जिसने हमें पैदा किया है। यह बंदा एवं उसके रब के बीच का स्वभाविक संबंध है कि बंदा अपने रब एवं पैदा करने वाले की इबादत करे। "तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी इबादत (वंदना) न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया है?" केवल एक आयत में मानव को परेशान करने वाले तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्त दे दिये गए हैं। "तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी इबादत (वंदना) न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया है और तुम सब उसी की ओर लौटाए जाओगे?" [सूरा यासीन : 22]

25- हम कैसे जानें कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के पैग़ंबर हैं?

उत्तर : बड़ी संख्या में आपके द्वारा नज़र आने वाले चमत्कार यह सिद्ध करते हैं कि आपके नबी होने में किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है।

हम देखें तो अरस्तू अपने पूरे कार्यों के कारण दार्शनिक हैं। अपने कहे हुए किसी एक वाक्य या किए गए किसी एक दार्शनिक विश्लेषण के कारण वह दार्शनिक नहीं हैं।

हिपोक्रेटिस अपनी पूरी चिकित्सा परियोजनाओं के कारण चिकित्सक हैं। अपने द्वारा की गई किसी एक सर्जरी के कारण नहीं।

इसी तरह, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किए गए विभिन्न प्रकार के चमत्कार यह सुनिश्चित करते हैं कि आप नबी हैं।

जब आप मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की जीवनी को देखेंगे, तो उन्हें सच्चा पाएंगे। आपकी सच्चाई को आपके सबसे कठोर शत्रु ने भी स्वीकार किया है। आपपर कभी झूठ या अनैतिकता का आरोप नहीं लगाया गया। फिर आपने जिन चीज़ों की भविष्यवाणी की, वह वैसे ही घटित हुईं जैसे आपने कहा था। इसके अलावा आपने जिन आस्थाओं की ओर बुलाया, वे सभी पूर्व के नबियों की आस्थाओं के साथ मेल खाती हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने की शुभ सूचना, आपके आने से सैकड़ों साल पहले नबियों ने दे दी थी। यह तमाम बातें यह सुनिश्चित करती हैं कि आप अल्लाह के रसूल और नबी थे।

फिर सबसे बड़ी निशानी जिसे लेकर आप आए, वह क़ुरआन है।

क़ुरआन, जिसके द्वारा अल्लाह ने साहित्यकारों को चुनौती दी कि वे इसके जैसी एक किताब या एक सूरा ही रचना करके दिखाएँ, परन्तु वे नहीं कर सके।

उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है : "तुम नहीं कर सके और तुम कभी नहीं कर सकते।" [सूरा अल-बक़रा : 164]

वे न उस काम को कर सके और न ही वे उसकी क्षमता रखते हैं।

पवित्र कुरआन बहुदेववादियों के भाषाविदों एवं साहित्यकारों को चुनौती देता रहा, परन्तु वे सब उसका मुक़ाबला करने से विवश रहे और

उस जैसा पेश नहीं कर सके।

डा० अब्दुल्लाह दराज़ -अल्लाह उनपर रहम करे- कहते हैं : "क्या रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को डर नहीं था कि यह चुनौती उन (काफ़िरों) के साहित्यिक अभिमान को भड़का देगी?

तथा सभी लोग एक होकर उसके मुक़ाबले पर उतर आएँगे? आप क्या करते यदि उनके भाषाविदों का एक समूह यह निर्णय ले लेता कि क़ुरआन के बराबर, यद्यपि उसके कुछ पहलुओं में, कोई कलाम सामने लाकर ही दम लेंगे?

फिर अगर आपकी आत्मा ने आपको अपने समय के लोगों को यह चुनौती देने के लिए मजबूर किया, तो आप आने वाली पीढ़ियों को यह चुनौती कैसे दे सकते थे?

यह एक ऐसा साहसिक कार्य है जिसमें अपनी क्षमता से अवगत व्यक्ति कभी कदम नहीं उठाएगा, सिवाय उस व्यक्ति के जो आकाशीय निर्णयों एवं आसमान की ख़बरों का जानकार हो। इसी लिए उसने इस चुनौती को दुनिया के सामने रखा। यह अंतिम निर्णय था। जिसने भी इसका विरोध किया वह हर सदी और युग में स्पष्ट असहायता और घोर विफलता से दोचार हुआ।[1]

इन बहुदेववादियों ने देखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लड़ने के लिए सेनाओं और दलों को इकट्ठा करना, क़ुरआन

[1] "अल-नबअ अल-अज़ीम (महान ख़बर), डा० अब्दुल्लाह दराज़, पृष्ठ: 44, 45।

का विरोध करने और चुनौती को स्वीकार करने की तुलना में अधिक आसान है। वे इतना ही कर सकते हैं। "तथा काफ़िरों ने कहा कि इस क़ुरआन को न सुनो और इस (के सुनाने) के समय कोलाहल (शोर) करो। सम्भवतः, तुम प्रभुत्वशाली हो जाओ।" [सूरा फ़ुस्सिलत : 26]

सभी अरब और वह क़ौमें, जिन तक यह चेतावनी पहुँची, कुछ ऐसा कर नहीं सकीं, जिससे नास्तिकों का कलेजा ठंडा होता तथा उन जैसे अन्य लोगों को सुकून मिलता।

आलूसी -उनपर अल्लाह रहम करे- कहते हैं : "तब से लेकर आज तक उनमें से किसी ने भी एक शब्द नहीं बोला और न कोई वर्णन या विशेषता व्यक्त की।"

जुबैर बिन मुत्इम ने, जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे, कहा : मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मग़रिब में सूरा तूर पढ़ते हुए सुना। जब आप इस आयत को पहुँचे : "क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं? या उन्होंने ही पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? वास्तव में, वे विश्वास ही नहीं रखते हैं। या फिर उनके पास आपके रब के ख़ज़ाने हैं या वही (उसके) अधिकारी हैं?" [सूरा अल-तूर : 35]

तो वह कहते हैं : मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मेरा दिल उड़ा जा रहा हो।"[1]

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 4854।

क़ुरआन में बड़े अद्भुत रहस्य मौजूद हैं, जो सीधे आत्मा तक पहुंच जाते हैं।

ज़रा इसपर विचार करें कि जब अबू बक्र क़ुरआन पढ़ते थे, तो उससे आकर्षित और प्रभावित होकर, उनके घर के आसपास बहुदेववादियों की महिलाओं की भीड़ इकट्ठा हो जाया करती थी, यहाँ तक कि क़ुरैश के पुरुष इससे भयभीत हो गए थे।[1]

इसलिए अरब प्रतिनिधिमंडल इस बात पर सहमत हुए कि उन्हें क़रआन नहीं सुनना चाहिए और न ही उनके परिवारों को इसे सुनाना चाहिए। अविश्वास पर डटे रहने का यही एकमात्र तरीक़ा है।

पवित्र क़ुरआन का एक चमत्कारिक पहलू अब्दुल्लाह दराज़ - अल्लाह उनपर दया करे- के अनुसार यह है कि अलग-अलग समय पर क़ुरआन की अलग-अलग आयतें उतरती हैं। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ आयतों को सूरतों के बीच और कुछ दूसरी आयतों को दूसरी सरतों के बीच विशिष्ट स्थानों पर रखने की ओर इशारा करते हैं। फिर, अंत में, प्रत्येक सूरा एक अलग संरचना के रूप में प्रकट होती है। अब्दुल्लाह दराज़ -अल्लाह आप पर रहम करे- कहते हैं : क़ुरआन के उतरने के समय क़ुरआन के कुछ स्थान दूसरे स्थानों से अलग प्रतीत होते थे। फिर बाद में जो आयतें उतरती थीं तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश, जिसे आप जिब्रील अलैहिस्सलाम से प्राप्त करते थे, के अनुसार कुछ आयतों को यहाँ जोड़ते गए, कुछ आयतों को वहाँ, कुछ को

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 3905।

बीच में, यहाँ तक कि वह आहिस्ता आहिस्ता स्थिर इकाइयों में बदलते गए।

जब हम इतिहास को देखते हैं, -विशेषकर पवित्र क़ुरआन की आयतों के उतरने के इतिहास को- तो पाते हैं कि आम तौर पर वह्य विशेष परिस्थितियों और अवसरों से जुड़ी हुई होती थी और यह हमसे पूछता है कि फिर कब हर सूरा को अलग इकाई के रूप में संगठित करने का कार्य पूरा हुआ?

मानो कुरान एक प्राचीन इमारत के अलग-अलग और गिने हुए टुकड़ों के रूप में था। और इसे अपने पूर्व रूप में कहीं और फिर से बनाने का इरादा था। अन्यथा, एक ही समय में इस तात्कालिक और व्यवस्थित तरतीब की व्याख्या कैसे की जा सकती है? विशेषकर जब मामला बहुत-सी सूरतों का हो?

लेकिन कौन-सी ऐतिहासिक गारंटी, जिसे एक व्यक्ति भविष्य की घटनाओं, उनकी विधायी आवश्यकताओं और उनके लिए वांछित समाधान के सामने ऐसी योजना बनाते समय प्राप्त कर सकता है, भाषाई रूप की तो बात ही छोड़िए कि जिसके द्वारा इन समाधानों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए, और अमुक सूरा के बजाय इस सूरा के साथ इसकी शैलीगत अनुकूलता भी हो?

क्या इसका नतीजा यह नहीं है कि इस योजना को पूरा करने तथा वांछित तरीक़े से इसकी प्राप्ति के लिए महान सृष्टिकर्ता के हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जिसके पास इस वांछित समन्वय को स्थापित करने की

क्षमता है?"।[1]

क़ुरआन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की सच्चाई का एक मुकम्मल प्रमाण है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथों पर जारी होने वाले चमत्कार हज़ार से अधिक हैं। उनका ज़माना बहुत क़रीब है एवं उनके रिवायत करने वाले सृष्टि के सबसे सच्चे और सबसे नेक लोग हैं।

जिन लोगों ने हम तक इन चमत्कारों को पहुँचाया, वे छोटी-छोटी बातों में भी झूठ बोलना उचित नहीं समझते थे, तो फिर उनपर झूठ बोलने का आरोप कैसे लगाया जा सकता है? वे इस सत्य.को भी अच्छी तरह जानते थे कि जिसने जान-बूझकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झूठ गढ़ा, उसका ठिकाना जहन्नम है। जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इससे सावधान करते हुए कहा है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ चमत्कारों को हज़ारों सहाबा ने देखा और कुछ चमत्कारों को उनमें से दसियों ने रिवायत किया। वे तमाम लोग कैसे हर एक में झूठ पर सहमत हो सकते थे?

आपके उन चमत्कारों का उदाहरण, जिनके गवाह लोगों की एक भारी भीड़ रही, तने के रोने वाली हदीस है। यह बहुत प्रसिद्ध एवं मुतावातिर हदीस है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ख़जूर के तने पर टेक लगाकर ख़ुतबा दिया करते थे। जब आपके लिए मिंबर तैयार कर लिया

[1] "मद्खल इला अल-क़ुरआन अल-करीम", डा० अब्दुल्लाह दराज़

गया, तो आप उसपर चढ़कर ख़ुतबा देने लगे। इससे ख़जूर का वह तना बहुत उदास हो गया और बच्चे की तरह कराह कर रोने लगा। वह इसी प्रकार आपके शोक में उदास और रोता रहा, यहाँ तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको गले लगा लिया और तब जाकर वह चुप हुआ।

इस हदीस़ को अनस बिन मालिक, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन उमर, उबय बिन काब, अबू सईद, सह्ल बिन साद, आयशा बिन्त अबू बक्र और उम्म-ए-सलमा जैसे सहाबा व सहाबियात ने रिवायत किया है।

क्या इतने सारे सहाबा इस तरह की ख़बर देने में झूठ बोलने पर सहमत हो सकते हैं?

बल्कि आपके कुछ चमत्कारों को हज़ारों स़हाबा ने देखा। जैसा कि आपकी पवित्र उंगलियों के बीच से पानी की धारा प्रवाहित होने वाला चमत्कार, जिस पानी को पंद्रह सौ सहाबा ने पिया और उससे वज़ू किया। यह हदीस मुतावातिर है एवं इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।

कम खाना को ज़्यादा कर देने वाला चमत्कार, ताकि उससे एक बड़ी सेना का पेट भर जाए। यह हदीस भी मुतावातिर है और सहाबा की एक बड़ी संख्या ने इसे रिवायत किया है। इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब सहीह बुख़ारी में खाना ज़्यादा करने के चमत्कार को पाँच स्थानों में ज़िक्र किया

है।[1]

जब सच्चाई के प्रमाण साबित हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूत की सत्यता को प्रमाणित करने वाले चमत्कार भरे पड़े हैं, तो एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए कहाँ तक उचित है कि वह इन तमाम तथ्यों को झुठलाए?

इनके अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कार के दूसरे उदाहरण इस प्रकार हैं :

एक रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को आदेश दिया कि आज बहुत सख़्त हवा चलेगी। आपने लोगों को रात की नमाज़ पढ़ने से भी मना कर दिया। परन्तु एक व्यक्ति रात की नमाज़ पढ़ने लगा, तो उसको हवा ने उठा कर उसके स्थान से दूर एक स्थान में पहुंचा दिया।[2]

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्जाशी की मौत की ख़बर उसी दिन दे दी, जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी। आपने उनकी नमाज़ -ए-जनाज़ा में चार बार तकबीर पढ़ी।[3]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमर, उसमान, अली, तलहा और ज़ुबैर -अल्लाह उन सब पर राज़ी हो- के बारे में बताया था कि वे शहीद होंगे और आम लोगों की तरह बिस्तर पर नहीं मरेंगे।

---

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस़ संख्या : 1217, 2618, 3578, 4101, 6452, ये सभी अलग-अलग घटनाएं हैं और यह केवल बुख़ारी में है।

[2] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 3319।

[3] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 1333।

एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अबू बक्र, उमर, उसमान, अली, तलहा और ज़ुबैर -अल्लाह उनसे राज़ी हो- पहाड़ के ऊपर गए, तो चट्टान में हरकत हुई। यह देख अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहाड़ से कहा : "शांत हो जाओ, तुम्हारे उपर नबी, सिद्दीक़ और शहीद हैं।"[1]

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने को नबी, अबू बक्र को सिद्दीक़ और अन्य शेष लोगों को शहीद कहा और वही हुआ जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया था।

इसी तरह एक सौ पचास हदीसे हैं, जिनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रब से दुआ की और आपकी दुआ उसी समय क़बूल भी हो गई। लोगों ने सब कुछ अपनी आंखों से देखा।[2]

मक्का वालों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई निशानी दिखाने की मांग की (जो उनकी नबूवत की पुष्टि करे), तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें चाँद को दो टुकड़े करके दिखाया। चाँद को दो टुकड़े इस तरह हो गए कि लोगों ने दोनों टुकड़ों के बीच हिरा पहाड़ को देखा। यह हदीस़ मुतावातिर है। यानी उच्च श्रेणी की सहीह हदीस है।

---

[1] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 2417।

[2] सईद बिन अब्दुल क़ादिर बाशंफर ने इन हदीसों को अपनी पुस्तक "दलाइल अल-नुबूवह" (دلائل النبوة) में एकत्रित किया है। यह पुस्तक दार इब्ने हज़्म से प्रकाशित हुई है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सूरा क़मर को, जिसमें चाँद के टुकड़े होने के चमत्कार का उल्लेख है, ईद तथा जुमा आदि बड़ी सभाओं में पढ़ते, ताकि उसमें जिस चमत्कार का ज़िक्र है, उसे लोग सुनें और इसके द्वारा आपकी नबूवत की सच्चाई सामने आए।

इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है कि आदम जानदार सृष्टियों में सबसे अंतिम सृष्टि हैं। "आदम जुमा के दिन अस्र के बाद सबसे अंतिम में पैदा होने वाली सृष्टि हैं।"[1]

यह वैज्ञानिक तथ्य आज स़ाबित हो गया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कैसे पता चला कि आदम अलैहिस्सलाम पौधों और जानवरों के प्रकट होने के बाद पृथ्वी पर प्रकट होने वाला अंतिम प्राणी थे?

सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह के इस कथन को देखो : "और हमने रात्रि तथा दिन को दो प्रतीक बनाया, फिर हम ने रात्रि के प्रतीक को मिटा दिया तथा दिन के प्रतीक को प्रकाशयुक्त कर दिया।" [सूरा अल-इसरा : 67]

हम रात की निशानी को मिटा देते हैं, अर्थात चाँद मिटा देते हैं, जो रात की निशानी है और जो रौशन था और फिर उसकी रोशनी मिटा दी जाती है।

सहाबा -अल्लाह उनसे राज़ी हो- ने इस आयत की व्याख्या इसी प्रकार की है। इमाम इब्न-ए-कस़ीर ने अपनी तफ़सीर में अब्दुल्लाह बिन

[1] सहीह अल-जामे, हदीस संख्या : 8188।

अब्बास -अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो- से रिवायत किया है, वह कहते हैं : "चाँद सूरज की तरह चमक रहा था, जो रात की निशानी है, फिर उसे मिटा दिया गया।"

अजीब बात यह है कि आज विज्ञान भी इसी परिणाम तक पहुँचा है। नासा ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट और आधिकारिक चैनल पर प्रकाशित किया है : चन्द्रमा के जीवन का पहले युग, और यह कि इस युग में वह चमकदार और चमकीला था।[1]

विश्वस्त रूप से यह साबित है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनगिनत चमत्कार सामने आए, आपने गैब की बातें बताईं, धरती और आकाशों के अदृश्य और सूक्ष्म रहस्यों को सामने लाया, आपपर क़ुरआन उतरा, पिछले नबियों की शिक्षाएँ लोगों के सामने रखीं, अल्लाह की ओर से आपको समर्थन भी मिलता रहा और मृत्यु से पहले एक संपूर्ण शरीयत परस्तुत करने में सफल रहे।

इसलिए इस बात में कहीं कोई संदेह नहीं है कि आप अल्लाह के नबी हैं। मानव विवेक भी यही कहता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा गैब के बारे में कही हुई बातों की संख्या हज़ार से अधिक है।

इन बातों को सृष्टि के सबसे सच्चे एवं नेक लोगों यानी सहाबा ने

[1] http://www.nasa.gov/mission_pages/LRO/news/vid-tour.html
https://www.youtube.com/watch?v=UIKmSQqp8wY

रिवायत किया है।

अजीब बात यह है कि बड़े सहाबा ने चमत्कारों को देखे बग़ैर इस्लाम धर्म अपना लिया था। वे इस्लाम ले आए थे, क्योंकि वे जानते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे हैं और उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला है।

यह बड़े सहाबा का स्टैंड था, जो एक बुद्धिमान एवं समझदार स्टैंड था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हमेशा सच बोलना आपकी नुबूवत को साबित करने का एक संपूर्ण एवं पर्याप्त तर्क है। यह इस लिए कि जो व्यक्ति नुबूवत का दावा कर रहा है, या तो वह लोगों में सबसे सच्चा होगा, क्योंकि वह नबी है और नबी लोगों में सबसे सच्चा इंसान होता है।

या फिर वह लोगों में सबसे झूठा इंसान होगा, क्योंकि वह इतने बड़े एवं महत्वपूर्ण मामले में झूठ बोल रहा है।

और सबसे अधिक मूर्ख लोग ही सबसे सच्चे इंसान और सबसे झूठे इंसान के बीच अंतर करने में असफल रह सकते हैं।

लोगों में सबसे सच्चे और सबसे झूठे की बीच अंतर करना एक बुद्धिमान के लिए बहुत ही आसान है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने के पहले दिन ही मक्का के बहुदेववादियों ने स्वीकार किया था कि आप कभी झूठ नहीं बोलेते हैं। उन लोगों ने आपसे कहा था : "हमने आपको कभी झूठ बोलते

हुए नहीं देखा।"[1]

जब हिरक़्ल ने अबू सुफ़यान से उनके इस्लाम लाने से पूर्व पूछा : "क्या तुम लोग उनके नबी होने का दावा करने से पहले उनपर झूठ बोलने का आरोप लगाया करते थे?"

अबू सुफ़ियान ने कहा था : "नहीं।"

यह सुन हिरक़्ल ने कहा था : "ऐसा नहीं हो सकता है कि वह लोगों के मामले में तो झूठ से दूर रहे और अल्लाह के मामले में झूठ बोले।"

फिर हिरक़्ल ने अपना वह प्रसिद्ध वाक्य कहा था : "यदि मैं उनके पास होता तो उनके दोनों पैर धोता।"[2]

मक्का के काफिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पूरे जीवन में एक भी झूठ को उजागर करने में असमर्थ थे। इसलिए क़ुरआन ने उनके कुफ़्र का खंडन किया है, क्योंकि उन्होंने उनकी स्थिति से भली-भाँति अवगत होने के बावजूद उनका इंकार किया। यह आपके नबी बनाए जाने से पहले की बात है। हमारे पाक रब ने कहा है : "या उन्होंने अपने रसूल को नहीं पहचाना, इस कारण वे उसका इनकार कर रहे हैं?" [सूरा अल-मूमिनून : 69]

---

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 4971।

[2] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 7।

अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स्थिति एवं आपकी जीवनी, आपके नबी होने पर एक संपूर्ण प्रमाण है।

आपपर अल्लाह की रहमत और सलामती हो।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूवत की सच्चाई के प्रमाण भरे पड़े हैं जो परस्पर एक दुसरे को मजबूती भी प्रदान कर रहे हैं, तो एक बुद्धिमान के लिए कहाँ तक उचित है कि वह इन तमाम तथ्यों को झुठलाए?

26- मुझे कैसे पता चलेगा कि मुझे अल्लाह पर विश्वास रखने की आवश्यकता है?

उत्तर : आप अपने दिल की हालत पर विचार करें, पता चल जाएगा कि आपकी परीक्षा ली जा रही है। क्या आपके अंदर सही करने और गलत न करने की भावना नहीं पाई जाती है?

अगर आपके सामने कुछ सामान पड़े हों और उनका मालिक उनसे ग़ाफ़िल हो, तो आपके दिल में यह एहसास पैदा होगा कि इन सामानों को ले लें एवं इनसे लाभ उठाएं। जबकि इसके मुक़ाबले में एक दूसरा एहसास यह पैदा होगा कि नहीं ऐसा न करें। यह हराम एवं अपराध है।

इसी प्रकार आप अपने जीवन के हर मोड़ पर परीक्षा से दोचार होते हैं।

यह एहसास -करने या न करने का एहसास- आपके अंदर पाया जाता

है, क्योंकि वास्तव में आप आज़माए जा रहे हैं। यह बिना कारण नहीं है।

अल्लाह तआला ने कहा है : "हमने उसे राह दर्शा दी। (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।" [सूरा अल-इंसान : 3]

मनुष्य अपने अंदरूनी एहसास; "करें या न करें" के साथ, अपने जीवन के हर मोड़ पर या तो शुक्रगुज़ार है या नशुक्रा।

बल्कि मुनष्य के जीवन के हर-हर क़दम में, उसके लिए संभव है कि या तो वह अच्छा करे या बुरा, वह मस्जिद की तरफ जाए या खेल तमाशे में मगन रहे।

इसलिए उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है : "मैंने जिन्नात और इन्सानों को मात्र इसी लिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें।" [सूरा अल-ज़ारियात : 56]

आप अपने हर क़दम में अल्लाह की इबादत या उसकी अवज्ञा का एक रूप पाएंगे।

जिसे अल्लाह के आदेशों का पालन करने का समर्थ प्राप्त होगा, वह मुक्ति प्राप्त करेगा और जो अल्लाह के आदेशों की अवज्ञा करेगा, वह गुनहगार होगा।

यह वैकल्पिकता एक व्यक्ति के द्वारा किए गए, उसके हर काम पर उसका हिसाब-किताब निर्धारित करेगी।

हमें पैदा करने का उद्देश्य हमारी परीक्षा लेना एवं हमें आज़माया जाना है। यही वह उद्देश्य है जिसके लिए नबियों को भेजा गया एवं किताबें

उतारी गई। "और हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो तथा ताग़ूत (अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्य) से बचो।" [सूरा अल-नह़्ल : 36]

जब मौत के रूप में परीक्षा का समय ख़त्म हो जाता है, तो हम अल्लाह की ओर लौटते हैं। "और उसी की ओर लौटाए जाओगे।" [सूरा यासीन : 22]

"और यह कि तेरे रब ही के पास (सब को) पहुंचना है"। [सूरा अल-नज्म : 42] "निःसंदेह तुम्हें अपने रब की ओर लौट कर जाना है।" [सूरा अल-अलक़ : 8] अतः हम सब अल्लाह ही की ओर लौट कर जाएंगे, ताकि अपने किए का हिसाब दें। "और यह कि उसके काम को उसे दिखा दिया जाएगा, फिर उसे उसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा।" [सूरा अल-नज्म : 40-41] हमने जो भी काम किए हैं, उसे दिखाया जाएगा और उस पर नतीज़ा निर्धारित होगा। "तो जिसने कण (ज़र्रे) के बराबर भी पुण्य (नेकी) किया होगा वह उसे देख लेगा। और जिसने एक कण के बराबर भी बुरा कर्म किया होगा, उसे देख लेगा।" [सूर अल-ज़लज़ला : 7,8]

27- क्या अल्लाह पर ईमान और नबियों का इंकार काफी है?

उत्तर : नहीं।

अल्लाह पर विश्वास करना और नबियों का इंकार करना पर्याप्त नहीं है। मनुष्य को अल्लाह के लिए पूर्ण ईमान लाना अनिवार्य है। इसका क्या यह अर्थ है कि आप ईमान लाएँ कि अल्लाह ही सृष्टिकर्ता है, जीविका देने वाला एवं प्रबंधक है, फिर आप उसकी वह्य एवं पैगंबरों का इंकार करें?।

यह सबसे बड़ा कुफ़्र है।

बल्कि अल्लाह की वह्य के इंकार से बड़ा कोई अपराध नहीं है। महान अल्लाह ने कहा है: "जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान नहीं रखते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अंतर करें, और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते हैं, और इसके बीच रास्ता बनाना चाहते हैं। यही लोग पक्के काफ़िर हैं और हमने इन काफिरों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।" [सूरा अल-निसा : 151]

जो अल्लाह पर ईमान रखे और नबियों का इंकार करे, वही असल काफ़िर है।

जिसने नबियों में से किसी नबी का इंकार किया, उसने अल्लाह का इंकार किया। इसलिए कि उसने अल्लाह की वह्य का इंकार किया। इसीलिए अह्ले किताब काफ़िर ठहरे, क्योंकि उन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की नुबूवत का इंकार किया। "निःसंदेह, जो लोग अह्ले किताब में से काफ़िर हो गए तथा मुश्रिक (मिश्रणवादी), तो वे सदा नरक की आग में रहेंगे और वही दुष्टतम जन हैं।" [सूरा अल-बय्यिनह : 6]

तथा उनको जहन्नम में धकेल दिए जाने की चेतावनी दी। "जो सच्ची चेतावनी है।" [सूरा क़ाफ़ : 14]

इतना कहने मात्र से न इस्लाम पूरा हो सकता है और न नजात मिल सकती है कि अल्लाह ही सृष्टिकर्ता है, जीविका देने वाला है, ज़िन्दा करने

वाला है एवं मारने वाला है, बल्कि इसके लिए रसूलों पर ईमान लाना भी ज़रूरी है।

इस प्रकार केवल अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाना एवं नबियों का इंकार करना प्रयाप्त नहीं है। न ही क़यामत के दिन इस तरह का ईमान अल्लाह के निकट कोई काम देगा। इस लिए ज़रूरी है कि अल्लाह की इबादत की जाए और उसके सारे रसूलों पर ईमान लाया जाए।

यदि अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाना पर्याप्त होता, तो अल्लाह न रसूलों को भेजता और न ही किताबें उतारता। इसलिए कि तमाम मानव जाति अल्लाह को स्वाभाविक रूप से जानती है।

लिहाज़ा जिस अल्लाह ने आपको पैदा किया, आपको सुपथ दिखाया, खाना दिया, वह अकेला योग्य है कि उसकी इबादत करें, जैसा कि उसने रसूलों एवं नबियों के द्वारा इसका आदेश दिया।

28- क्या काफ़िर अपने नेक कार्यों का बदला अल्लाह से पाएंगे?

उत्तर : नेक काम एक स्वभाव है, जिस स्वभाव पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है। इसलिए आप देखते हैं कि कोई भी इंसान -चाहे वह काफ़िर हो या बहुदेववादी- कुछ न कुछ पुण्य के कार्य ज़रूर करता है। सभी लोग उसी स्वभाव की बुनियाद पर नेक कार्य करते है, जिस पर वे पैदा हुए हैं।

परन्तु पुण्य के कार्य की स्वीकृति के लिए शर्त है कि उसका उद्देश्य

अल्लाह की ख़ुशी को प्राप्त करना हो, उसके द्वारा अल्लाह से बदला की उम्मीद हो।

इसलिए मैं उस काफ़िर व्यक्ति से कहता हूँ जो अल्लाह के साथ-साथ दूसरे माबूदों को पूजता है कि उनके पास जाओ, जिनको तुम अल्लाह के साथ शरीक करते हो और उनसे अपने नेक काम का बदला प्राप्त करो। इसलिए कि तुम अपने नेक काम से केवल अल्लाह की ख़ुशी नहीं चाहते हो।

एक व्यक्ति की कल्पना करो, जिसको उसके परिवार ने पाला, बड़ा किया और उस पर तब तक खर्च किया जब तक कि वह एक मज़बूत युवक नहीं बन गया। फिर वह मज़बूत युवक दूसरों के पास जाकर उनकी सेवा करने लगे। क्या उसका यह अधिकार बनता है कि इसके बाद वह अपने परिवार के पास आए और उससे कहे कि मुझे दूसरों की सेवा का बदला दो?

उसे चाहिए कि वह उनके पास जाएं जिनकी वह सेवा करता था। उनसे अपना बदला प्राप्त करे।

हालाँकि अल्लाह ही के लिए उच्च उदाहरण है।

अल्लाह, जिसने तुमको पैदा किया, तुमको खाना दिया, तुमको हर प्रकार की नेमतों से नवाज़ा, फिर तुम उसकी इबादत छोड़ देते हो और ऊपर से अपने काम का बदला उसी से मांगते हो, यह कैसे हो सकता है?

इसलिए उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है : "और हम उनके

कर्मों को लेकर, धूल के समान उड़ा देंगे।" [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 23] एक अन्य स्थान में उसने कहा है : "तथा जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उनके कर्म किसी चटियल मैदान में एक मरीचिका की तरह हैं, जिसे सख़्त प्यासा आदमी पानी समझता है। यहाँ तक कि जब उसके पास आता है, तो उसे कुछ भी नहीं पाता।" [सूरा अल-नूर : 39]

जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे अपने कर्म का कोई बदला पाने के हक़दार नहीं हैं, यद्यपि उनका काम अच्छा ही क्यों न हो। इसलिए कि काफ़िर लोग अपने नेक कामों का बदला अपने रब से नहीं चाहते हैं और न ही वे अपने सृष्टिकर्ता की ख़ुशी की ख़्वाहिश रखते हैं।

केवल नेक काम करने का मामला नहीं है। हम सभी लोग अपने बहुत सारे नेक कामों में कोताही के शिकार हो जाते हैं। असल मामला यह है कि आप किस लिए और किसके लिए यह नेक काम करते हैं? क्या आप इसे अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए करते हैं या किसी को दिखाने के लिए या अल्लाह के अलावा किसी और के लिए करते हैं?

यह सभी स्थितियाँ अल्लाह के रास्ते में नहीं हैं और न ही इस प्रकार के नेक काम से अल्लाह की तरफ से किसी प्रतिफल की उम्मीद की सकती है।

29- जब इस्लाम सच्चा धर्म है, तो क्यों संदेह पाए जाते हैं?

उत्तर : संदेह एक ऐसी समस्या है जिसे मुसलमान अपने दीन में नहीं समझते हैं। कभी कभी वह इससे भ्रमित हो जाता है यहां तक कि वह उसका समाधान पा ले।

अल्लाह तआला चाहता है कि धर्म के ग़ैर-बुनियादी मसाइल में कुछ संदिग्ध चीज़ें हों, ताकि वह लोग अपने रब के आज्ञापालन से दूर हो जाएं, जिनकी नीयत साफ़ नहीं है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है : "उसी ने आप पर ये पुस्तक (क़ुरआन) उतारी है, जिसमें कुछ आयतें मुहकम (सुदृढ़) हैं, जो पुस्तक का मूल आधार हैं, तथा कुछ दूसरी मुतशाबिहात (संदिग्ध) हैं। तो जिनके दिलों में कुटिलता है, वे उपद्रव की खोज तथा मनमाना अर्थ करने के लिए, संदिग्ध के पीछे पड़ जाते हैं। जबकि उनका वास्तविक अर्थ, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है, तथा जो ज्ञान में पक्के हैं, वे कहते हैं कि, हम ईमान लाते हैं, सब हमारे रब के पास से है, और बुध्दिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।" [सूरा आल-इमरान : 7] [सूरा आल-ए-इमरान : 85]

तो जिन लोगों के दिलों में खोट है, वे मुताशाबिहात के पीछे लगे रहते हैं, ताकि इनके द्वारा उपद्रव, अराजकता, फ़साद एवं अशांति पैदा करें, और अल्लाह से दूरी बना लें, जबकि इन आयतों का ज्ञान केवल अल्लाह को है।

ईमान व कुफ़्र का होना अल्लाह की हिकमत है। "तुम में से काफ़िर हैं एवं तुम में से मोमिन हैं।" [सूरा अल-तग़ाबुन : 2]

इन संदेहों के पीछे वही लोग पड़ते हैं जो कुफ़्र चाहते हैं। धर्म से, ईमान से एवं नमाज़ से दूर भागना चाहते हैं।

जहाँ तक मोमिन की बात है तो वह मुहकम और साबित प्रमाणों को मानता है, जो धर्म एवं रिसालत के सही होने की बाबत किताब का मूल

आधार हैं। यदि वह कोई बात नहीं समझ पाए तो उसके बारे में पूछता है, परन्तु वह उसके पीछे नहीं पड़ता है, जिसे वह समझ न पाए और जो उसे धर्म व इबादत से दूर ले जाए।

जिसे समझ न पाए, उसके कारण दीन से दूर वही जाता है, जिसके दिल में बीमारी हो। "वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, कहते हैं कि अल्लाह इस उदाहरण के द्वारा क्या चाहता है? अल्लाह इसी प्रकार जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है सुपथ दिखाता है।" [सूरा अल-मुद्दस्सिर : 31]

इन संदेहों के रहने की एक हिकमत यह भी है कि इनके द्वारा अल्लाह के धर्म का ज्ञान रखने वालों तथा उसमें गहरी नज़र रखने वालों की पहचान होती है। आप देखेंगे कि एक विद्वान व्यक्ति संदेहजनक मामलों का उत्तर जानता है और इस आधार पर उसकी एक आम आदमी से -जिसके पास दीन की गहरी जानकारी नहीं है और न ही उसने धर्म को पढ़ा है- की अलग पहचान बनती है। चुनांचे अल्लाह तआला इन ज्ञान वालों के दर्जे को ऊँचा करता है।

दरअसल सत्य स्पष्ट होता है, परन्तु गुंजलक चीज़ों का रहना इसलिए ज़रूरी है कि इससे छान-फटक होती है।

अल्लाह तआला का अपनी सृष्टि के बारे में दस्तूर यह है कि वह उसे ज़िम्मेदारी प्रदान करता है और ज़िम्मेदारी प्रदान करने के बारे में उसका दस्तूर यह है कि वह कुछ हिकमतों को छुपाए रखता है। अब कामयाब वह है, जो अपनी जानी हुई चीज़ों के द्वारा उसे जान ले, जिसे वह नहीं जानता

है। जबकि नाकाम वह है, जो अपनी जानी हुई चीज़ों के द्वारा उसको जान न सके, जिसे वह नहीं जानता है।

30- अल्लाह ने बुराई को क्यों पैदा किया है? दूसरे शब्दों में मुसलमान बुराई की मुश्किल से कैसे अपनी हिफ़ाज़त कर सकता है?

उत्तर : मानव इतिहास पर नज़र डालें तो बुराई लगभग नास्तिक्ता का सबसे बड़ा कारण रहा है।

"तथा लोगों में वह (भी) है, जो अल्लाह की इबादत एक किनारे पर रहकर करता है। फिर यदि उसे कोई भलाई पहुँच जाए, तो वह उससे संतुष्ट हो जाता है, और यदि उसे कोई परीक्षा आ पहुँचे, तो मुँह के बल फिर जाता है। वह दुनिया एवं आख़िरत में घाटे में पड़ गया। यही तो खुला घाटा है।" [सूरा अल-हज्ज : 11]

कुछ लोग बला, मुसीबत और परेशानी आने पर, अल्लाह का इंकार कर बैठते हैं।

कभी-कभी नास्तिक यह प्रश्न करने लगाता है कि बुराई का अस्तित्व ही क्यों है?

उत्तर सरल है : इसलिए कि हम शरीयत को मानने के पाबंद हैं।

इसलिए कि हम परीक्षा की दुनिया में हैं।

महान अल्लाह ने कहा है : "और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों से तुम्हें आज़माते हैं।" [सूरा अल-अंबिया : 35]

अच्छाई और बुराई इसलिए है, क्योंकि आप शरीयत को मानने के पाबंद हैं और यही पाबंदी आपके वजूद का उद्देश्य है।

एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "जिसने मृत्यु तथा जीवन को उत्पन्न किया है, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें किसका कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली, अति क्षमावान् है।" [सूरा अल-मुल्क : 2]

बुराई, फ़ितना और बलाओं का अस्तित्व, अपने आप में धार्मिक पक्ष के सही होने तथा नास्तिक्ता के ग़लत होने का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अगर भौतिकता ही केवल हमारी विशेषता होती, तो हम न तो अच्छे और न ही बुरे को समझ पाते।

यदि सारा ब्रह्मांड अर्थहीन होता, तो यह हम पर कभी स्पष्ट नहीं होता कि यह अर्थहीन है[1]। क्योंकि नास्तिक दृष्टिकोण के अनुसार हम सख्त भौतिकवादी अनिवार्यताओं का पालन करते हैं और हमपर प्रकृति के नियम लागू होते हैं। इस संदर्भ में, हम बुराई की प्रकृति या बुराई शब्द का अर्थ कभी नहीं समझेंगे।

क्या सबसे विकसित जानवर बुराई की जटिलता को समझते हैं?

बुराई को समझने का मतलब है कि हम इस दुनिया की औलाद नहीं हैं और यह कि हम बुराई के अस्तित्व के बारे में अपनी समझ डार्विनियन भौतिकवाद के अलावा किसी अन्य आधार से प्राप्त करते हैं।

[1] C. S. Lewis

हम एक आसमानी आधार से संबंधित हैं, किसी नास्तिक, भौतिकवादी एवं सांसारिक मॉडल से नहीं। यह एकमात्र स्पष्टीकरण है कि हम बुराई को क्यों समझते हैं।

जब हम पाबंद हैं, तो फ़ितना तथा मुसीबत का होना स्वभाविक है और यह भी स्वभाविक है कि हम बुराई को ज्ञात कर सकें।

बुराई, कुछ कष्ट और अवज्ञा करने की क्षमता स्वतंत्र इच्छा और अल्लाह के द्वारा ज़िम्मेदारी प्रदान किए जाने की स्वाभाविक आवश्यकता एवं स्पष्ट परिणाम है।

बुराई, क्लेश, विपत्तियाँ और इच्छाएँ, यह ऐसी चीज़े हैं, जो नेक इंसान के अंदर मौजूद भलाई एवं बुरे इंसान के अंदर मौजूद बुराई को खोलकर बाहर लाती हैं।

नास्तिकों की स्थिति आश्चर्यजनक है। जब वे बुराई के होने के कारण सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का इंकार करते हैं, तो वे यह विश्लेषण पेश करते हैं :

1- जब बाप अच्छा हो एवं अपने बेटे से प्यार करता हो, तो क्यों वह एक दर्दनाक एंटी-माइक्रोबियल इंजेक्शन देने की अनुमति देता है?

2- इस इंजेक्शन के कारण बेटे को कष्ट होता है।

3- तो इसका मतलब यह हुआ कि बाप मौजूद नहीं है।[1]

क्या यह एक तर्कसंगत निष्कर्ष है?

[1] "उसुस ग़ाइबह", म, अहमद हसन, मर्कज़ दलाइल। कुछ परिवर्तन के साथ।

फिर यह स्वाभाविक है कि हम अच्छे और बुरे के बारे में आकाशीय हिकमत की सभी सूक्ष्मताओं को समझते नहीं हैं।

मूसा अलैहिस्सलाम और ख़ज़िर की घटना में छुपी हिकमत को अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया है। हांलाकि यह ऐसे कार्य हैं जो स्पष्ट रूप से निंदनीय और अप्रिय हैं। परन्तु उनके पीछे बड़ी भलाई छुपी हुई थी। क़ुरआन में मूसा और ख़ज़िर की कहानी केवल कहानी एवं वर्णन के तौर पर नहीं आई है, बल्कि यह मूल्यांकन एवं मनुष्य में जो कमियाँ एवं जल्दबाजी में फैसला करने की प्रवृत्ति है, उसकी स्वीकृति के तौर पर आई है।

बुराई का मामला भी अजीब है कि अगर दुनिया में बुराई न होती तो आप उस स्थान से नहीं निकलते, जहाँ आप पैदा हुए।

न सभ्यता पाई जाती। न शहर, न कारखाने और न घर का निर्माण होता। न लोगों को काम करने की आवश्यकता होती, न लोग बीमारी का मुक़ाबला करने तथा समस्या का समाधान ढूँढ़ने को सोचते और न ही सुख की तलाश की चिंता में पड़ते।

न मनुष्य को अपने जन्म स्थान से दूसरे स्थान की ओर पलायन करने की आवश्यकता होती।

जब कोई बुराई न हो, कोई परेशानी न हो, कोई क्लेश न हो, कोई थकान अथवा कोई समस्या न हो, जिसका समाधान तलाश किया जाए,

तो फिर क्यों इंसान अपने आपको थकाएगा, रात जागेगा, चिंता में

लिप्त होगा और काम करेगा?

इसलिए दुनिया में बुराई का होना ज़रूरी है।

आप इस बात को सोचें

और अल्लाह से डरें। इसलिए कि आप ज़िम्मेवार हैं।

बहुत-से लोगों को जब मुसीबत एवं परेशानी घेरती है, तो अल्लाह की ओर लौटते हैं और सदाचारियों में से हो जाते हैं। पाक एवं महान है अल्लाह एवं सारी प्रशंसा उसी की है।

अल्लाह के सभी निर्णयों (तक़दीरों) में कोई न कोई हिकमत और भलाई ज़रूर है।

एक मुसलमान के लिए अल्लाह के सभी निर्णनयों पर ईमान लाना आवश्यक है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : "यदि आप उहुद पहाड़ के समान भी सोना अल्लाह के रास्ते में खर्च कर दें, तो भी अल्लाह उसे आपकी तरफ से स्वीकार नहीं करेगा, जब तक आप तक़दीर पर ईमान न रखें। यह जान लें कि जो आपको पहुँचने वाला होगा, वह आपसे कभी नहीं चूकेगा, और जो आपसे चूकने वाला होगा वह आपको कभी नहीं पहुँच सकता है। जो व्यक्ति इस पर ईमान लाए बग़ैर मर गया, वह जहन्नम में प्रवेश कर गया।"[1]

हर मुस्लिम के लिए अल्लाह की अच्छी या बुरी तक़दीर से संतुष्ट

[1] सहीह सुनन अबू दाऊद : 4699।

होना अनिवार्य है।

अल्लाह की सभी तक़दीरें अच्छी हैं। भले ही उनमें से कुछ से ज़ाहिरी तौर पर बुराई, संकट या नुक़सान प्रतीत हो, परन्तु अंत में वह अपने अंदर मौजूद बड़ी भलाई और उच्च स्तरीय आकाशीय हिकमत को सामने लाती है।

31- क्या धर्म धार्मिक युद्धों का कारण बना, जिनके बादल एक लंबे समय तक धरती के उपर मंडराते रहे?

उत्तर : मानवता हज़ारों वर्षों से एकेश्वरवादी शरीयतों के साथ जी रही है और चार हज़ार वर्षों से तीन बड़ी इब्राहीमी शरीयतों के साथ। कभी भी धर्म ने मानव जाति के लिए ख़तरा पैदा नहीं किया। बल्कि उसने मानवता के लिए उच्च नैतिक उसूल पेश किए, जिनपर मोमिन एवं नास्तिक सभी सहमत हैं। उसने मज़बूत एवं शुद्ध सभ्यताओं की नींव रखी। हम यह कह सकते हैं कि धरती पर मौजूद हर भलाई उन्हीं नुबूवतों की परछाई हैं। धर्म ने अदालतों को हज़ारों मुकदमों से छुटकारा दिलाया। इन सबसे ऊपर यह कि धर्म ने पृथ्वी पर मानव अस्तित्व के उत्थान के लिए व्यवहारिक एवं वैज्ञानिक मूल्यों की नींव रखी! जिन देशों ने एकेश्वरवादी विधानों को अपनाया उनमें आज भी एक प्रकार की सांस्कृतिक विविधता है, जिसने उन लोगों के भी सुरक्षित रुप से जीने दिया, जो उनसे असहमत हैं, बल्कि इन्हीं एकेश्वरवादी शरीयतों के कारण उन्हें एक सुरक्षा कवच उपलब्ध हुआ। जबकि कुछ देशों में नास्तिक्ता की एक ही सदी गुज़ारी है और पूरी मानवता बर्बादी के किनारे पर पहुँच गई है। आज नास्तिक्ता मानवता पर ख़तरे की बात करती है, जबकि मानव इतिहास ने नास्तिकता से अधिक खतरनाक

विधि कभी नहीं देखी है। नास्तिक कीड़ों और नास्तिकता के उद्भव के प्राकृतिक परिणामों के कारण ही नास्तिक लेनिन द्वारा पूर्व सोवियत संघ में कोलाज का नरसंहार हुआ, नाजी जर्मनी में जातीय अल्पसंख्यकों का विनाश हुआ, नास्तिक पोल पॉट द्वारा कंबोडिया की मानव आबादी के एक चौथाई हिस्से को ख़त्म कर दिया गया, नास्तिक माओत्से तुंग (Mao Zedong) द्वारा महान सांस्कृतिक क्रांति के नाम पर 52 मिलियन चीनी मारे गए और यूरोप में उग्रवादी नास्तिकों की लीग (League of Militant Atheists)का उदय हुआ, जिसने आधिकारिक तौर पर 42 हजार धार्मिक संस्थानों -चर्चों और मस्जिदों- को बंद कर दिया[1]। दरअसल, प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध भी नास्तिक युद्ध थे, जिन्हें नास्तिक धारणाएँ और नस्लीय शुद्धता के लिए प्रयास करने वाले विचार कंट्रोल कर रहे थे। जिसके परिणाम स्वरूप दुनिया की लगभग 5% आबादी का विनाश हुआ और इन विश्व युद्धों ने विजेता और पराजित दोनों को तीन सदी पीछे धकेल दिया। दार्शनिकों ने सभ्यता के अंत के रूपक के रूप में पेरिस के केंद्र में एक मूत्रालय रखा। नास्तिक लड़ाइयों ने परमाणु हथियारों के शस्त्रागार को खुला छोड़ दिया है, जो पूरी मानव जाति को कई बार खत्म करने के लिए काफी है। बीसवीं सदी के युद्धों का एक सरल विश्लेषण दिखाता है कि नास्तिकता का चेहरा कितना भयानक है। नास्तिकता ने इस विचार को फैलाया है कि भविष्य की किसी भी लड़ाई में मानव जाति की मृत्यु हो सकती है और यह विचार आज तक क़ायम है। यह अपेक्षित नास्तिक स्राव है।

32- मुसलमान अपने एकेश्वरवादी धर्म के बावजूद पिछड़ेपन

[1] https://en.wikipedia.org/wiki/League_of_Militant_Atheists

के शिकार क्यों हैं, जबकि पश्चिमी दुनिया बहुत विकसित है?

उत्तर : यह सभ्यता से जुड़ा हुआ प्रश्न है!

इस प्रश्न के कारण बहुत-से नबियों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

और इसकी वजह से न जाने कितने अनुयायी धर्म से निकल गए।

सभ्यता का प्रश्न हर युग में समुदायों के कुफ़्र की जड़ रहा है।

अल्लाह तआला ने कहा है : "तथा जब उनके समक्ष हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं, तो काफ़िर ईमान वालों से कहते हैं कि (बताओ) दोनों सम्प्रदायों में किसकी दशा अच्छी है और किसकी मज्लिस (सभा) अधिक भव्य है?" [सूरा मर्यम : 73] जब उन आयतों को पढ़ा जाता है, जिनमें धर्म के सही होने के तर्क एवं प्रमाण मौजूद हैं, तो अविश्वासी लोग काफ़िर सम्प्रदायों की प्रगति का उदाहरण देते हैं। "दोनों सम्प्रदायों में किसकी दशा अच्छी है और किसकी मज्लिस (सभा) अधिक भव्य है?"

शोधकर्ता इब्राहिम अल-सकरान -अल्लाह उनकी हिफ़ाजत फ़रमाए- कहते हैं : "यह एक ऐतिहासिक कानून और एक आवर्ती ब्रह्मांडीय विधान है। आश्चर्य इसके पुराने अभिलेखागार के चिंतन के साथ समाप्त नहीं होता है। नुबूवतों की शुरूआत से लेकर समकालीन इस्लामी कार्य किए जाने तक, अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने वाले सभी लोग भौतिक शक्तियों का सामना करते रहे हैं जो उनसे श्रेष्ठ रही हैं तथा लोगों को अल्लाह के पैग़ाम से रोकती रही हैं।

नबियों के अनुभवों को देखो। आप पाएंगे कि वे सभी के सभी अल्लाह की वह्य और भौतिक शक्ति के बीच लड़ाई के खुले उदाहरण हैं। आप पाएंगे कि भौतिक शक्ति लोगों के दिमाग व दिल को अपनी ओर खींचती रही है और उन्हें वह्य को सुनने एवं उसके सामने आत्मसमर्पण करने से रोकती रही है। आप पाएंगे कि धार्मिक कार्यकर्ता भौतिक दिखावे की ओर लोगों के आकर्षण से बहुत आहत हैं। पहले नबी नूह -उनपर शांति हो-, उन्हें उनकी क़ौम ने सभी भौतिक स्पष्टता के साथ बताया : "और हम देख रहे हैं कि तुम्हारा अनुसरण वही लोग कर रहे हैं, जो हममें से निचली श्रेणी के लोग हैं।" [सूरा हूद : 27] जब मूसा अलैहिस्सलाम प्रकट हुए, तो फिर वही अल्लाह की वह्य के सामने भौतिक शक्ति के अत्याचार और अहंकार की श्रृंखला दोहराई गई। "और मूसा ने कहा : ऐ हमारे रब! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को सांसारिक जीवन में शोभा-सामग्री तथा धन-संपत्ति प्रदान की है, ऐ हमारे रब! ताकि वे (लोगों को) तेरे मार्ग से भटकाएँ।" [सूरा यूनुस : 101] हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए भी परिस्थिति कुछ अलग नहीं थी। आपकी नुबूवत और आपकी लाई हुई वह्य का इंकार करने वाले लोग भी अपने इंकार का कारण आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कमज़ोर आर्थिक स्थिति ही बताते थे। "तथा उन्होंने कहा कि यह क़ुरआन इन दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया?" [सूरा ज़ुख़रुफ़ : 31]

इब्राहीम सकरान की बात समाप्त हुई।

किसी भी युग या नुबूवत के इतिहास में मानव को किसी भी परेशानी से उतना नहीं आज़माया गया, जितना भौतिक शक्ति के द्वारा आज़माया

गया।

जबकि प्रगति और सत्य के बीच कोई संबंध ही नहीं है।

भौतिक विकास या पिछड़ापन, इसका इससे कोई रिश्ता नहीं है कि किसके साथ सत्य है और किसके साथ असत्य।

इंसान के अच्छे एवं नेक होने के लिए आवश्यक नहीं है कि वह सभ्यता के तौर पर विकसित भी हो।

कभी-कभी व्यक्ति इस्लामी शिक्षाओं का पालन करने वाला होता है, परन्तु वह सीधा-साधा एवं निर्धन होता है, जबकि कभी-कभी इसका उलटा होता है।

कितने ही समुदाय सांस्कृतिक तौर पर विकसित हुए, परन्तु वे सबसे अधिक अल्लाह की शरीयत, उसके दीन एवं वह्य से दूर रहे। "और क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते उन लोगों का परिणाम कैसा हुआ, जो उनसे पहले थे? वे उनसे अधिक शक्तिशाली थे और उन्होंने धरती को जोता-बोया और उसे आबाद किया उससे अधिक जितना उन्होंने उसे आबाद किया है।" [सूरा रूम : 8] भौतिक प्रगति और धनवान् होना सत्य वाले के लिए कोई मानदंड नहीं है। "फिर जब उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, तो वे उस ज्ञान पर इतराने लगे, जो उनके पास था, और उन्हें उस (यातना) ने घेर लिया, जिसका वे उपहास कर रहे थे।" [सूरा ग़ाफ़िर : 83]

भौतिक उन्नति अपने आपमें न अच्छी है और न ही बुरी। उसकी

प्रशंसा उसी हद तक की जाएगी, जिस हद तक उसे अल्लाह की वह्य द्वारा अनुशंसित की जाएगा, उसमें धर्म को लागू किया जाएगा, उसके द्वारा दीन के कार्यों में सहयोग लिया जाएगा, उसको जिस हद तक जन सेवा में प्रयोग किया जाएगा और अल्लाह की ख़ुशी के लिए लोगों की स्थिति सुधारने के लिए उसे ख़र्च किया जाएगा।

यही अपेक्षित उन्नति है।

लोगों के बीच वास्तविक श्रेष्ठता का मानदंड उनका भौतिक विकास नहीं है, परन्तु वास्तविक श्रेष्ठता धर्मपरायणता एवं नेक काम में है। भौतिक विकास एक साधन है, न कि उद्देश्य। यह लोगों की सेवा एवं उनको लाभ पहुंचाने का साधन है।

अल्लाह की वह्य द्वारा भौतिक विकास की कांट-छांट की जाएगी। केवल यही विकास अपेक्षित है।

यह पृथ्वी पर वास्तविक उत्तराधिकार है। अल्लाह के लिए बंदगी का उत्तराधिकार, जीवन के हर क्षेत्र के लिए ईमानी अनुशासन का उत्तराधिकार। "वे लोग कि यदि हम उन्हें धरती में आधिपत्य प्रदान करें, तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे काम का आदेश देंग और बुरे काम से रोकेंगे। और सभी कर्मों का परिणाम अल्लाह ही के अधिकार में है।" [सूरा अल-ह़ज्ज : 41] याद रहे कि जब मुसलमान उसको दिए गए आदेश का पालन करता है, तो अल्लाह उसके लिए दुनिया में हर भलाई, सुख, ख़ुशी एवं उन्नति के दरवाज़े खोल देता है, आख़िरत में उसको नजात देता है एवं उसके रुतबे को ऊँचा करता है। "अल्लाह ने उन लोगों से, जो

तुममें से ईमान लाए तथा उन्होंने सुकर्म किए, वादा किया है कि वह उन्हें धरती में अवश्य ही अधिकार प्रदान करेगा, जिस तरह उन लोगों को अधिकार प्रदान किया, जो उनसे पहले थे, तथा उनके लिए उनके उस धर्म को अवश्य ही प्रभुत्व प्रदान करेगा, जिसे उसने उनके लिए पसंद किया है, तथा उन (की दशा) को उनके भय के पश्चात् शांति में बदल देगा। वे मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ किसी चीज़ को साझी नहीं बनाएँगे।" [सूरा अल-नूर : 55]

जब मुसलमान अपने धर्म को लागू करेंगे, तो वे दीन व दुनिया के अगुवा और इमाम होंगे।

इस्लाम ने उनके द्वारा एक ऐसी सभ्यता का विकास किया है, जिसका सूरज 12 सौ सालों तक प्रकाशमय रहा और इस पूरी अवधि में बिना किसी रुके जारी रहा।

इस्लाम के कारण इस्लामी सभ्यता का उद्भव हुआ

और यही वह अकेला धर्म है, जिसने किसी सभ्यता को जन्म दिया।

जबकि शेष सभी धर्मों को दूसरी सभ्यताओं ने अपनाया।

जैसा कि पश्चिमी सभ्यता ने ईसाई धर्म ग्रहण किया और भारतीय सभ्यता ने हिंदू धर्म को अपनाया।

अकेला धर्म जिसने किसी सभ्यता को जन्म दिया, वह इस्लाम है।

जब तक मुसलमान अपने धर्म की ज़िम्मेदारियों को समझते और अदा करते रहे, वे भौतिक और आध्यात्मिक रूप से दुनिया का नेतृत्व करते

रहे।

1453 ई. में जब इस्लाम ने क़ुस्तुंतुनिया में प्रवेश किया, तो यूरोप में अंधकारमय मध्य युग समाप्त हो गया।

यूरोप में अंधकारमय युग समाप्त होने की तिथि 1453 ई है। यही वह वर्ष है जब इस्लाम यूरोप में प्रवेश हुआ।

जैसे ही इस्लाम यूरोप के हृदय में प्रवेश हुआ, उसमें ज्ञान का प्रकाश चमक उठा।

कांग्रेस के पुस्तकालय में, पुस्तकालय के मुख्य हॉल की छत पर कुछ वृत्त उकेरे गए हैं, जो पश्चिमी सभ्यता की प्रगति के स्रोतों का संकेत देते हैं। केवल इस्लाम ही एकमात्र धर्म है, जिसका उल्लेख सात वृत्तों में हुआ है।

इस्लाम ही वह एकमात्र धर्म है, जिसका उल्लेख वहाँ किया गया है और यह प्राकृतिक विज्ञान के साथ खास है।

इस्लाम : प्राकृतिक विज्ञान

जबकि शेष वृत्त देशों के साथ खास हैं और उन देशों ने जो पेश किया है, वह साहित्य, कला या भाषा के क्षेत्र में प्रगति है।

इस्लाम ने विज्ञान पेश किया और सात सौ सालों तक दुनिया में विज्ञानों की अंतर्राष्ट्रीय भाषा अरबी भाषा रही।[1]

[1] https://www.telegraph.co.uk/news/science/science-news/3323462/Science-Islams-forgotten-geniuses.html

जब मुसलमानों का दीन अच्छा होगा, तो दुनिया भी अच्छी होगी।

33- पाक एवं महान अल्लाह की इबादत के क्या प्रतिफल हैं?

उत्तर : मनुष्य अपने स्वभाव से स्वयं को नहीं जानता है। उसकी आत्मा की शांति और उसके हृदय के एकाकीपन को दूर करने के लिए अल्लाह की इबादत ज़रूरी है। "वे जो ईमान लाए और उनके दिलों को अल्लाह की याद से संतुष्टि मिलती है। सुन लो! अल्लाह की याद ही से दिलों को संतुष्टि मिलती है।" [सूरा अल-राद : 28] अतः इबादत से दिल को शांति मिलती है। "और हम जानते हैं कि उनकी बातों से आपका दिल संकुचित हो रहा है। अतः आप अपने रब की प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन करें तथा सज्दा करने वालों में रहें। और अपने रब की इबादत करें।" [सूरा अल-हिज्र : 97-99]

अपने रब की इबादत करें, ताकि आपके दिल को शांति मिले।

इत्मीनान एवं चिंतन के साथ दो रकात नमाज़ मानव आत्मा में वह प्रभाव डालता है, जो घंटों का मनोवैज्ञानिक शांति सत्र नहीं डाल पाता है।

इबादत में मानव आत्मा के लिए शांति है। हर वह व्यक्ति जो अल्लाह के ज़िक्र से दूर है, उसका दिल अशांत रहता है। आप देखेंगे कि वह हमेशा दुनिया पाने की चाह में परेशान रहता है। न उसका पेट भरता है और न ही वह शांति पाता है। "और (हाँ) जो मेरे ज़िक्र (क़ुरआन) से मुंह फेरेगा, उसकी ज़िंदगी तंगी में रहेगी।" [सूरा ताहा : 124]

मनुष्य के पास कितनी ही प्रचूर मात्रा में जीविका हो, यदि वह ईमान

के बिना है, तो संकट में रहेगा और अज्ञात के साथ कभी न खत्म होने वाली एक उन्मत्त दौड़ में, आप उसको हमेशा परेशान ही पाएंगे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "जो दुनिया कमाने की चिंता में रहता है, अल्लाह उसके मामलों को उसके लिए तितर-बितर कर देता है, और ग़रीबी उसका भाग्य बना देता है। किसी को दुनिया उतनी ही मिलती है, जितनी उसके भाग्य में होती है। जबकि जिसकी नीयत आख़िरत होती है, अल्लाह उसके मामलों को एकजुट कर देता है और मालदारी उसके दिल में रख देता हैर। उसके पास दुनिया स्वयं आ जाती है, जबकि वह उस से मुँह फेरे रहता है।"[1]

अतः इबादत मुसलमान को दुनिया के सामने झुकने से छुटकारा देती है और उसे आज़ाद कर देती है।

इस लिए वह मुसलमान जो सत्य में अल्लाह की इबादत करता है, वह जीवन के अर्थ को समझता है, दुनिया की वास्तविकता को समझता है, इस दुनिया में उसके अस्तित्व की हक़ीक़त को जानता है। वह जानता है कि वह इस दुनिया में इस लिए है कि उसकी परीक्षा हो एवं वह सही अर्थ में अपने रब की इबादत करे। न कि इसलिए है कि वह ऐसी परेशानी में जीवन गुज़ारे, जिसका कोई लाभ न हो। हमारे पाक रब ने कहा है : "जिसने पैदा किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें से किसका कर्म अधिक अच्छा है?" [सूरा अल-मुल्क : 2]

34- सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रति समर्पण की अभिव्यक्तियाँ

[1] सहीह सुनन तिर्मिज़ी, हदीस संख्या : 2465।

क्या हैं? दूसरे शब्दों में, कैसे आपको पता चलेगा कि आप पूर्ण रूप से अल्लाह के प्रति समर्पित हैं?

उत्तर : अल्लाह के प्रति आत्मसमर्पण की चार निशानियाँ हैं और वह यह हैं :

पहली निशाली : अपने जीवन में हर छोटे बड़े कार्य में अल्लाह ही की बंदगी का ख्याल रखना। अल्लाह तआला ने कहा है : "आप कह दें कि निश्चय ही मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण, सारे संसारों के रब अल्लाह के लिए है। जिसका कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं (इस उम्मत में) प्रथम मुसलमान हूँ।" [सूरा अल-अनआम : 163]

मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी, मेरा जीना एवं मेरा मरना, सब सारे जहानों के रब के लिए है। मैं जो कुछ करता हूँ, वह अल्लाह के लिए है। मेरी नमाज़ अल्लाह के लिए है, माँ-बाप का अज्ञापालन अल्लाह के लिए है, मेरा पढ़ना-लिखना सीखना एवं लोगों के लिए लाभकारी बनना भी अल्लाह के लिए है, यहाँ तक कि हम सोते भी इस लिए हैं कि कल हम अल्लाह के आदेशों का पालन अधिक उर्जावान होकर करें।

हर काम में अल्लाह की बंदगी, यह अल्लाह के लिए अपने आपको समर्पित करने की पहली निशानी एवं प्रदर्शन है।

अल्लाह के लिए पूर्ण समर्पित होनी की दूसरी निशानी :अल्लाह के आदेशों का पालन किया जाए एवं उसने जिन चीज़ों से रोका है, उनसे रुका जाए। पाक अल्लाह ने कहा है : "हे ईमान वालो! अल्लाह एवं उसके रसूल

के आज्ञाकारी रहो, तथा उससे मुँह न फेरो, जबकि सुन रहे हो।" [सूरा अल-अनफ़ाल : 20] एक अन्य स्थान में अल्लाह ने कहा है : "ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे प्रवेश कर जाओ।" [सूरा अल-बक़रा : 208]

"فِي السِّلْمِ" का अर्थ है इस्लाम में।

पूर्ण रूप से इस्लाम में प्रवेश कर जाओ, अर्थात अल्लाह के द्वारा दिए गए हर आदेश से चिमट जाओ तथा उसने जिससे रोका है, उससे रुक जाओ।

अल्लाह ने जिस चीज़ का हमें आदेश दिया है, उसे करें, और जिस चीज़ से मना किया किया है, उसे छोड़ दें, यही अल्लाह के लिए पूर्ण समर्पण एवं झुकना है।

तीसरी निशानी : समर्पण की तीसरी निशानी यह है कि हम अल्लाह के फ़ैसले के सामने अपने आपको समर्पित कर दें, उसकी शरीयत से संतुष्ट रहें एवं उसे स्वीकार करें।

हम अल्लाह के हर क़ानून को मानें एवं उसके द्वारा दिए गए किसी भी क़ानून का इंकार न करें। मसलन अल्लाह के दिए हुए दंड के क़ानून। हमपर अनिवार्य है कि हम अल्लाह के क़ानून से राज़ी हों, क्योंकि अल्लाह ही जानता है कि क्या उसकी सृष्टि के लिए बेहतर है। वह जानता है कि यह दंड के क़ानून समाज को पाक रखने के लिए ज़रूरी हैं। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "क्या वह नहीं जानेगा, जिसने पैदा किया, और वह मेहरबान एवं हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है?" [सूरा मुल्क: 14]

एक अन्य स्थान में पवित्र अल्लाह ने कहा है : "और अल्लाह से अच्छा निर्णय किसका हो सकता है?" [सूरा अल-माइदा : 50]

अतःअल्लाह ही बेहतर जानता है कि लोगों के लिए, उनकी दुनिया एवं परलोक में क्या अच्छा है।

अल्लाह की शरीयत को लागू करना, यह लोगों को पाक करता है एवं उन्हें शांति से जीने का अवसर प्रदान करता है।

अल्लाह एवं उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने का गुमान रखने वाला एक व्यक्ति, काब बिन अशरफ़ यहूदी के पास गया, ताकि वह किसी मामले में उसका मन चाहा फ़ैसला सुनाए, बजाय इसके कि वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाता, क्योंकि उसे डर था कि हो सकता है कि आपका फ़ैसला उसके अनुसार न हो। इसी परिदृश्य में अल्लाह ने यह आयत उतारी : "(ऐ नबी!) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा, जिनका यह दावा है कि जो कुछ आपकी ओर उतारा गया है और जो कुछ आपसे पहले उतारा गया है उसपर वे ईमान रखते हैं, किंतु वे चाहते हैं कि अपने विवाद के निर्णय के लिए ताग़ूत (अल्लाह की शरीयत के अलावा से फैसला करने वाले) के पास जाएँ, जबकि उन्हें उस (ताग़ूत) का इनकार करने का आदेश दिया गया है? और शैतान चाहता है कि उन्हें सच्चे धर्म से बहुत दूर कर दे।" [सूरा अल-निसा : 151]

यदि आप मुसलमान हैं और अल्लाह के लिए समर्पित हैं, तो अल्लाह की शरीयत को थाम लें, एवं अल्लाह के निर्णय के सामने आत्मसमर्पण करें, यद्यपि निर्णय आपकी उम्मीद के अनुकूल न आए। न

कि आप शरीयत को छोड़कर किसी यहूदी के पास जाएं, ताकि वह आपके मामले का फ़ैसला आपके अनुकूल सुनाए।

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन की दूसरी आयतों में कहा है :

"और हमने जो भी रसूल भेजा, वो इसलिए, ताकि अल्लाह की अनुमति से, उसकी आज्ञा का पालन किया जाए।" [सूरा अल-निसा : 151]

अल्लाह ने रसूलों को इसलिए नहीं भेजा है कि हम उनको छोड़ दें एवं अन्य विधानों से निर्णय लें।

फिर महान अल्लाह इस घटना और इस प्रकार की घटनाओं में जो हमारे लिए नसीहत छुपी है, उसको एक महत्वपूर्ण आयत के साथ समाप्त करता है, जो अल्लाह की शरीयत के अनुसार निर्णय लेने एवं उसके सामने सर झुकाने की आवश्यकता को बयान करती है। महान व पाक अल्लाह ने कहा है : "तो क़सम है तेरे रब की! वे तब तक ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक कि सभी आपस के विवादों में आपको फ़ैसला करने वाला न स्वीकार कर लें। फिर जो फ़ैसला आप कर दें, उससे अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और नाखुशी न पाएँ, और पूर्णतः स्वीकार कर लें।" [सूरा अल-निसा: 65] अल्लाह की शरीयत के सामने पूर्ण आत्मसमर्पण अनिवार्य है और यह इस्लाम के लिए समर्पित होने की निशानी है।

जहां तक अल्लाह के लिए समर्पित होने की चौथी निशानी की बात है, तो वह अल्लाह के भाग्यों के सामने समर्पित होना है। हर चीज़ की

तकदीर को पवित्र अल्लाह ने अपनी हिकमत के अनुसार नियत किया है। एक मुसलमान अल्लाह के सामने उसकी नियत की हुई तमाम तकदीरों की बाबत समर्पण कर देता है चाहे वे भली हों या बुरी।

यदि मुसलमान को भला पहुँचता है तो शुक्र करता है, यदि नुक़सान पहुँचता है तो धैर्य रखता है।

यदि आपको अल्लाह तआला खाना दे, अच्छी जीविका, सुन्दर घर, पढ़ने में सफलता, स्वस्थ एवं अच्छा परिवार दे, तो उसपर अल्लाह का शुक्र अदा करें।

यदि मुसलमान को कोई नुक़सान, बीमारी, ग़रीबी, डर, परेशानी या संकट पहुँचे, तो वह इसपर स़ब्र करता है एवं अल्लाह से मदद माँगता है। यह स्थिति अपने पाक रब के सामने समर्पित एवं झुकने वाले मुसलमान का होता है।

हर चीज़ अल्लाह के निर्धारित किए हुए भागय के अनुसार होती है। स्वस्थ, बीमारी, मालदारी, ग़रीबी, हर चीज़ उसकी तक़दीर एवं हिकमत के अनुसार होती है। मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह इसपर राज़ी हो, क्योंकि तक़दीर अल्लाह ही निर्धारित करता है।

महान अल्लाह ने कहा है : "निःसंदेह हमने प्रत्येक वस्तु को एक अनुमान के साथ पैदा किया है।" [सूरा अल-क़मर : 49] एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "आप कह दें कि हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी, परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दीया है।" [सूरा अल-तौबा : 51]

हमें वही पहुँचता है, जिसको अल्लाह ने हमारे लिए निर्धारित कर दिया है।

एक अन्य स्थान में सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फ़रमाया है : "कोई प्राणी ऐसा नहीं कि अल्लाह की अनुमति के बिना मर जाए।" [सूरा आल-ए-इमरान : 85]

मौतों को अल्लाह ने निर्धारित कर रखा है।

ब्रह्मांड में जो कुछ होता है, हर कण जो दुनिया में गतिमान है एवं हर घटना जो घटित होती है, सब कुछ अल्लाह के ज्ञान में होता है, उसकी मर्ज़ी, अनुमान, हिकमत एवं भाग्य के अनुसार होता है।

महान अल्लाह ने कहा है : "तथा उसने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की, फिर उसका उचित अंदाज़ा निर्धारित किया।" [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 23]

उसी पाक अल्लाह ने हर चीज़ को पैदा किया है एवं हर चीज़ का भाग्य निर्धारित कर रखा है। वह जो चाहता है, होता है और जो नहीं चाहता है, नहीं होता है।

हम मुसलमान के तौर पर अल्लाह की तक़दीरों को मानने पर बाध्य हैं।

इससे मनुष्य अल्लाह के सामने समर्पित हो जाता है।

और अंत में! हम इस्लाम में कैसे प्रवेश कर सकते हैं?

इस्लाम पूरी मानव जाति के लिए अल्लाह का धर्म है। महान

अल्लाह ने कहा है : "निस्संदेह अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम ही है।" [सूरा आल-ए-इमरान : 19] इस्लाम वह धर्म है कि जिसके अलावा अल्लाह दूसरे धर्मों को स्वीकार नहीं करेगा। "जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म ढूंढे, उसका धर्म कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह प्रलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।" [सूरा आल-ए-इमरान : 85]

इसलिए हर इंसान के लिए अनिवार्य है कि वह इस्लाम को अपनाए।

केवल इस्लाम में जहन्नम से नजात एवं अल्लाह की ख़ुशी और जन्नत की प्राप्ति है।

इस्लाम में प्रवेश करना सभी नेमतों में सबसे बड़ी नेमत है, बल्कि यह आपके अस्तित्व की सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण चीज़ है।

वास्तव में इस्लाम स्वभाव एवं बुद्धि की तरफ लौटना है।

इस्लाम ग्रहण करना बहुत आसान है। इसमें किसी अनुष्ठान या औपचारिकता की आवश्यकता नहीं है। बस यह है कि इंसान दोनों गवाही के शब्दों को अपने मुँह से बोल दे। गवाही के शब्द इस प्रकार हैं : " أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمدًا رسول الله" (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई सत्य पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं)।

बस इतने से आदमी मुसलमान हो जाता है।

इसके बाद इस्लाम पर अमल करना शुरू कर दे।

मैं आपको इस्लाम हाउस के वेबसाइट को फॉलो करने की नसीहत करता हूँ। हर व्यक्ति इससे अपनी भाषा में लाभान्वित हो सकता है। इससे यह मालूम हो सकेगा कि एक नया मुसलमान कैसे इस्लाम के अनुसार चले।

वेबसाइट की लिंक : https://islamhouse.com/ar/

विषय सूची

नास्तिकता से इस्लाम की ओर पलायन 3

1- नास्तिकता का अर्थ क्या है?.....10

2- आप नास्तिकता के अंदर क्या कमी पाते हैं?.....11

3- सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का क्या प्रमाण है? 12

4- उत्पन्न करने के प्रमाण का क्या अर्थ है? 12

5- देखभाल और प्रवीणता के प्रमाण का क्या अर्थ है? 14

6- इंसान या दूसरे जीवों का एक बहुत ही सरल पूर्व अस्तित्व का स्रोत (जिससे वह विकसित हुए हों) क्यों नहीं हो सकता है?.....17

7- देखभाल और प्रवीणता के प्रमाण के क्या उदाहरण हैं?.....20

8- कुछ नास्तिक देखभाल के प्रमाण की आलोचना करते हुए कहते हैं कि यहाँ रोग एवं भूकंप आदि कुछ ऐसी चीज़ें पाई जाती हैं, जो आदर्श नहीं हैं। 28

9- यह क्यों नहीं माना जा सकता है कि किसी भौतिक कारण द्वारा इस ब्रह्मांड का निर्माण हुआ? उदाहरण स्वरूप : एक और सभ्यता या कुछ और? केवल एक अनन्त पूज्य ही को विशेष रूप से क्यों स्रष्टा माना जाए?.....29

10- हम ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले नियमों को जानते हैं और हम भूकंप के कारणों को भी अच्छी तरह जानते हैं। जब हम नियमों को जानते हैं, तो हमें सृष्टिकर्ता की आवश्यकता क्यों है?.....31

11- ब्रह्मांड के अचानक प्रकट होने को मानने में क्या बुराई है?.....33

12- हम नास्तिक का खंडन कैसे कर सकते हैं, जो कहता है कि यह ब्रह्मांड सदैव से है?.....34

13- कार्य-कारण का नियम सृष्टिकर्ता पर क्यों लागू नहीं होता? दूसरे शब्दों में सृष्टिकर्ता को किसने बनाया?.....35

14- ब्रह्मांड बहुत बड़ा है। हम इस विशाल ब्रह्मांड में इतने छोटे आकार के साथ केंद्र कैसे हो सकते हैं?.....36

15- कुछ नास्तिक कहते हैं : कई ग्रह मौजूद हैं और इसलिए, संभावनाओं के सिद्धांत के अनुसार, जीवन के लिए उपयुक्त कोई दूसरा ग्रह होना स्वाभाविक है। क्या यह तर्क सही है?.....40

16- एक से अधिक सृष्टिकर्ता क्यों नहीं हो सकते हैं?.....43

17- धर्म की क्या आवश्यकता है?.....44

18- इस नैतिकता को मस्तिष्क या समाज की उपज मानने में क्या रुकावट है?.....49

19- पृथ्वी की सभ्यताओं में एक से अधिक पूज्य हैं, तो फिर अल्लाह ही पर ईमान क्यों?.....51

20- यदि कोई व्यक्ति कुछ ऐसा करता है, जिसकी उसे आवश्यकता नहीं है, तो वह व्यर्थ कहलाता है! अल्लाह को हमारी जरूरत नहीं है, तो उसने हमें क्यों बनाया? 53

21- हम अल्लाह को कैसे पहचान सकते हैं? 57

22- दुनया में बहुत सारे धर्म मौजूद हैं, तो फिर इस्लाम ही क्यों? 62

23- इस्लाम क्या है?.....63

24- क्या इस्लाम के पास उन सवालों के जवाब हैं, जिनके जवाब देने में दिमाग हैरान हैं। मसलन यह कि हम कहां से आए हैं, हम यहाँ इस दुनिया में क्यों हैं और हम कहाँ जाने वाले हैं?.....65

25- हम कैसे जानें कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के पैग़ंबर हैं?.....66

26- मुझे कैसे पता चलेगा कि मुझे अल्लाह पर विश्वास रखने की आवश्यकता है? 80

27- क्या अल्लाह पर ईमान और नबियों का इंकार काफी है? 82

28- क्या काफ़िर अपने नेक कार्यों का बदला अल्लाह से पाएंगे?.....84

29- जब इस्लाम सच्चा धर्म है, तो क्यों संदेह पाए जाते हैं?.....86

30- अल्लाह ने बुराई को क्यों पैदा किया है? दूसरे शब्दों में मुसलमान बुराई की मुश्किल से कैसे अपनी हिफ़ाज़त कर सकता है?.....89

31- क्या धर्म धार्मिक युद्धों का कारण बना, जिनके बादल एक लंबे समय तक धरती के उपर मंडराते रहे? 94

32- मुसलमान अपने एकेश्वरवादी धर्म के बावजूद पिछड़ेपन के शिकार क्यों हैं, जबकि पश्चिमी दुनिया बहुत विकसित है?.....95

33- पाक एवं महान अल्लाह की इबादत के क्या प्रतिफल हैं? 102

34- सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रति समर्पण की अभिव्यक्तियाँ क्या हैं? दूसरे शब्दों में, कैसे आपको पता चलेगा कि आप पूर्ण रूप से अल्लाह के प्रति समर्पित हैं?.....103

और अंत में! हम इस्लाम में कैसे प्रवेश कर सकते हैं?.....109

विषय सूची.....112